# संस्कृत पुस्तक - 6

( छठी कक्षा के लिए )

C5L6R9

ਸਮੱਗਰ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ


## पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

**संशोधित संस्करण : 2025-26 .................. 511 प्रतियां**

**All rights, including those of translation, reproduction and annotation etc., are reserved by the Punjab Government**

**लेखक :** डॉ. वेद प्रकाश ''वाचस्पति''

**सम्पादिका :** श्रीमती सरोज आर्य

**चित्रकार :** श्रीमती कुलजीत कौर

## चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबन्दी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों का जाली प्रकाशन, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत गैरकानूनी है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

ਸਮੱਗਰ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਵਿਕਰੀ ਲਈ ਨਹੀਂ ਹੈ।

**सचिव,** पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर-160062 द्वारा प्रकाशित एवं मैसर्स **स्वैन प्रिंटिंग प्रैस,** जालन्धर द्वारा मुद्रित।

# प्राक्कथन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड के अधिनियम (एक्ट) के अनुसार बोर्ड का प्रमुख उत्तरदायित्व सभी विषयों के पाठ्यक्रम तैयार करना और उन पाठ्यक्रमों के अनुसार पाठ्य-पुस्तकें तैयार करना और उन्हें नवीन शिक्षा नीति के अनुसार संशोधित करना है। इन संशोधित पाठ्यक्रमों के आधार पर विभिन्न विषयों की पाठ्य-पुस्तकें तैयार की जा रही हैं। इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत संस्कृत विषय की मिडल, मैट्रिक तथा ग्यारहवीं तथा बारहवीं श्रेणियों की पाठ्य पुस्तकें तैयार करने की योजना बनाई गई है।

यह पुस्तक दाखिला वर्ष 1998 से छठी श्रेणी के लिए संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की गई है। पुस्तक को विद्यार्थियों के मानसिक स्तरानुरूप बनाने का यथेष्ट प्रयत्न किया गया है। आवश्यक व्याकरण तथा शब्दकोश को पाठ्य-पुस्तक का अंग बना दिया गया है।

आशा की जाती है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। फिर भी पुस्तक को और अधिक लाभदायक बनाने के लिए विद्वानों द्वारा दिए गए सुझाव, बोर्ड द्वारा सादर स्वीकार किए जाएंगे।

**चेयरमैन**

**पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड**

## इस पुस्तक के बारे में

१. संस्कृत को प्रारम्भ करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक एक प्रवेशिका है, यह एक सुगम प्रवेश-द्वार है। अत एव इस पुस्तक को हर प्रकार से प्रारम्भिक स्तर के अनुकूल बनाया गया है।

२. संस्कृत-शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश करने वाले विद्यार्थी का यह पहला ही पग है। उस की सुविधा को दृष्टि में रखते हुए उसे विविध शब्दों की रूपरचना से परिचित कराने के लिए अत्यन्त सरल एवं सीमित शब्द वर्गों को ही यहां पर रखा गया है, यथा-

(क) नामशब्दों में केवल अकारान्त पुंलिंग और अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों का ही प्रयोग यहां पर किया गया है।

(ख) उन्हीं के समान, विशेषण शब्दों में भी केवल अकारान्त पुंलिंग और अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों को ही चुना गया है।

(ग) तदनुसार, सर्वनाम शब्दों में तद् को पुंलिंग एवं नपुंसकलिंग में तथा युष्मद्, अस्मद् को ही यहां पर लिया गया है, और वे भी केवल प्रथमा विभक्ति में।

(घ) क्रियाशब्दों के लिए यहां पर मात्र भ्वादि-तुदादि-गणों की परस्मैपदी धातुएँ केवल लट् लकार में ही प्रयुक्त की गयी हैं।

इस प्रकार से, प्रारम्भिक विद्यार्थियों के हित में, विविध शब्दों की रूपरचना के क्षेत्र को यथासम्भव न्यूनतम सीमा रेखाओं में ही मर्यादित किया गया है। इतने से ही सुघटित, सार्थक वाक्य, कथा, एवं संलाप आदि की रचना हो सकती है। इन सीमित कतिपय वर्गों के अतिरिक्त अन्य शब्द-वर्गों की रूपरचना को जानने के लिए क्रमशः अगली श्रेणियों में समुचित अवसर उपलब्ध हैं। यहाँ पर पहले पग के लिए तो इतना ही पर्याप्त है, ताकि यह पहला पग सुगम एवं सुखद बना रहे।

३. इस पुस्तक की शब्दावली का चयन करते समय, इस विचार को पहल दी गयी है कि ये शब्द श्रेत्रीय भाषा में प्रायः तत्सम या तद्भव रूप में प्रचलित हैं, और इस कारण से विद्यार्थी के लिए चिर-परिचित हैं, जैसे- बालक, पुत्र, सिंह, वानर, काक, कोकिल, हंस, जल, फल, पत्र, घास, नील, पीत, रक्त, सुन्दर, चंचल, खेल्, हस्, चर्, पठ्, लिख्, खाद्, पिब्, चर्व्, चूष्, गर्ज्, कूर्द् आदि।

४. विषयवस्तु के लिए भी उन्हीं पदार्थों, कार्यों या दृश्यों को वाक्यों में वर्णित किया गया है, जो विद्यार्थी के प्रतिदिन के परिचय में अथवा व्यवहार में आते हैं, या उस के निकट परिवेश से सम्बन्धित हैं।

५.	इस पुस्तक की रचनाशैली भी विशेष ध्यान देने योग्य है। इसकी वाक्य रचना अति सरल है, चुस्त है, बोझिल नहीं। इस में प्रवाह है। सरलातिसरल वाक्यों से बने छोटे-छोटे पाठ विद्यार्थी की सुरुचि को बनाये रखते हैं।

इस के साथ ही, सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि भाषा-शिक्षण (Language Teaching) के नवीनतम सिद्वान्त संरचना-सारणी (Structural Approach) का सफल उपयोग इस पुस्तक के पाठों की रचना में किया गया है। इसके अनुसार, एक-एक संरचना (Structure) को, अर्थात वाक्य में प्रस्तुत किये गये नाम-सर्वनाम-विशेषण-क्रिया-शब्दों के एक-एक प्रकार के रूप-प्रयोग को, बार-बार पाठ के वाक्यों में, उनके अभ्यासों में, तथा अनुवाद-प्रत्यनुवाद के लिए देकर, उसे विद्यार्थी के मन-मस्तिष्क की गहराई में दृढ़ता से अंकित कर देने का भरसक प्रयास किया है।

६.	किसी संरचना को बार-बार सुनने, पढ़ने या प्रयोग करने पर विद्यार्थी अपने-आप ही उस संरचना के साथ अभ्यस्त हो जाता है। बार-बार का यह अभ्यास ही धीरे-धीरे उस संरचना के 'क्या, क्यों और कैसे' के रहस्य को विद्यार्थी के मन में उकेरने लगता है, और फिर उस का निष्कर्ष, अर्थात् नियम भी स्वयं उभरता प्रतीत होता है। अध्यापक ऐसे अवसर पर विद्यार्थी के साथ प्रश्नोत्तर के रूप में संवाद करते हुए, उस संरचना के तल में काम कर रहे नियम को विद्यार्थी के मुख से कहलवा कर, उसके मन में भर रहे निष्कर्ष को सम्पुष्ट कर सकता है।

७.	इस विधि के द्वारा, दृष्टान्त के सिद्धान्त की ओर, अर्थात् प्रयोग के द्वारा नियम को समझने की ओर, अग्रसर होते हुए निगमन-पद्धति (Deductive Method) के आधार पर, वाक्यरचना के नियमों का गहरा और अमिट प्रभाव विद्यार्थी के मन पर पड़ता है। यही एक सहज एवं सरलतम विधि है किसी भाषा को सीखने और उसके व्यावहारिक व्याकरण को समझने की।

८.	प्रत्येक पाठ के अन्त में दिये गये अभ्यास एवं अनुवाद-प्रत्यनुवाद के प्रश्नों को उस-उस पाठ का सहायक एवं पूरक (Supplementary & Complementary) अंग समझ कर, उन पर अनिवार्य रूप से कार्य किया जाना चाहिए। संस्कृत बनाने के लिए दिये गये हिन्दी-वाक्य वस्तुत: उस पाठ के संस्कृत वाक्यों का ही हिन्दी-रूपान्तर हैं। प्रत्यनुवाद की इस प्रक्रिया से संस्कृत बनाने में विद्यार्थी को बहुत आसानी रहेगी। इस प्रकार से विद्यार्थी जहाँ बिना किसी कठिनाई के संस्कृत बनाने का अभ्यास कर पायेगा, वहाँ पर वह उस पाठ के वाक्यार्थों और वाक्यरचना के नियमों के ज्ञान को सुदृढ़ कर सकेगा। ठीक ही तो है- द्विर्बद्धं सुबद्धं भवति।

९.	पाठ के अन्त में 'अध्यापन-संकेत' के अन्तर्गत कुछ सुझाव अध्यापक की कार्य-विधि के लिए दिये हैं। पाठों के वाक्यों के रचना-नियमों के बारे में भी स्थान-स्थान पर कुछ कहा गया है।

अध्यापक स्वयं अपने शब्दों में विद्यार्थी के साथ प्रश्नोत्तर करते हुए, उस पाठ के वाक्यों की रचना या शब्दों के विभक्ति-रूपों की समानता को आधार बना कर, तत्सम्बन्धी नियम का निष्कर्ष निकालने में विद्यार्थी को पथ प्रदर्शन और सहयोग दें, जबकि विद्यार्थी की अपनी विचारणा भी उसी ओर अग्रसर होने का यत्न कर रही होती है। अवश्यमेव इस से व्याकरण-नियमों को रटने के स्थान पर, उन्हें समझ कर याद रखने में अनुपम सहायता मिलेगी।

१०. हमें पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक के माध्यम से विद्यार्थी के लिए संस्कृत के साथ यह प्रथम परिचय अत्यन्त सुखद रहेगा।

**-डॉ. वेद प्रकाश 'वाचस्पति'**

# विषय-सूची


| पाठ संख्या | विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | अकारान्त पुलिंग : नामशब्द | 1 |
| 2. | नामशब्द : प्रथमा विभक्ति एकवचन, क्रियाशब्द : प्रथम पुरुष, एकवचन | 4 |
| 3. | नामशब्द : प्रथमा विभक्ति द्विवचन, क्रियाशब्द : प्रथम पुरुष, द्विवचन | 8 |
| 4. | नामशब्द : प्रथमा विभक्ति बहुवचन; क्रियाशब्द : प्रथम पुरुष, बहुवचन | 10 |
| 5. | सर्वनाम शब्द : तद् पुलिंग, प्रथमा विभक्ति तीनों वचन, क्रियाशब्द : प्रथम पुरुष तीनों वचन | 12 |
| 6. | सर्वनाम शब्द : युष्मद्, प्रथमा विभक्ति एकवचन: क्रियाशब्द: मध्यम पुरुष, एकवचन | 15 |
| 7. | सर्वनाम शब्द : युष्मद्, प्रथमा विभक्ति द्विवचन: क्रियाशब्द : मध्यम पुरुष, द्विवचन | 17 |
| 8. | सर्वनाम शब्द : युष्मद्, प्रथमा विभक्ति बहुवचन; क्रियाशब्द : मध्यम पुरुष, बहुवचन | 19 |
| 9. | सर्वनाम शब्द: अस्मद्, प्रथमा विभक्ति एकवचन; क्रियाशब्द: उत्तम पुरुष, एकवचन | 21 |
| 10. | सर्वनाम शब्द : अस्मद्, प्रथमा विभक्ति द्विवचन; क्रियाशब्द: उत्तम पुरुष, द्विवचन | 23 |
| 11. | सर्वनाम शब्द : अस्मद्, प्रथमा विभक्ति बहुवचन; क्रियाशब्द: उत्तम पुरुष, बहुवचन | 25 |
| 12. | विशेषण शब्द : अकारान्त, पुलिंग, प्रथमा विभक्ति | 27 |
| 13. | नामशब्द : अकारान्त, पुलिंग, द्वितीया विभक्ति | 29 |
| 14. | नामशब्द/विशेषण शब्द : अकारान्त, पुलिंग, द्वितीया विभक्ति | 31 |

15. नामशब्द : अकारान्त नपुंसकलिंग। सर्वनाम शब्द : तद्, नपुंसकलिंग, प्रथमा विभक्ति 33

16. नामशब्द–सर्वनाम–विशेषण–शब्द : नपुंसकलिंग, प्रथमा विभक्ति/द्वितीया विभक्ति 35

17. नामशब्द–विशेषण–शब्द : पुलिंग/नपुंसकलिंग, तृतीया विभक्ति 37

18. नामशब्द–विशेषण–शब्द : पुलिंग/नपुंसकलिंग, चतुर्थी विभक्ति 40

19. नामशब्द–विशेषण शब्दः पुलिंग/नपुंसकलिंग, पंचमी विभक्ति 43

20. नामशब्द–विशेषण–शब्द : पुलिंग/नपुंसकलिंग, षष्ठी विभक्ति 45

21. नामशब्द–विशेषण–शब्दः पुलिंग/नपुंसकलिंग, सप्तमी विभक्ति 47

22. नामशब्द–विशेषण शब्दः पुलिंग/नपुंसकलिंग, सम्बोधन विभक्ति 49

23. कथा – काकः लोमशः च 51

24. संलापः – वन–विहारः 53
(संख्याशब्द : पुलिंग/नपुंसकलिंग, प्रथमा विभक्ति)

25. लोकोक्ति–वचनानि 56

**व्याकरण – भागः** 57

**शब्दकोशः** 69

## पाठ : 1

# [ अकारान्त पुलिंग नामशब्द ]

छात्र :

बालक :

युवक :

अज :

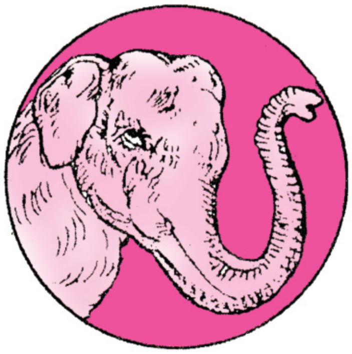

गज :

अश्वः

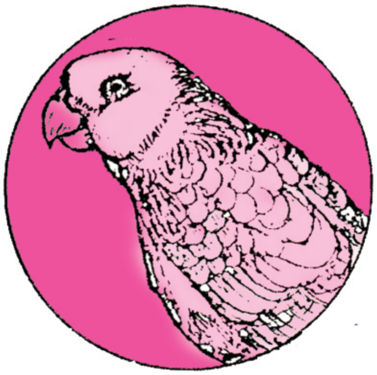

शुकः

कोकिलः

काकः

## शब्दार्थ --

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| छात्रः | = | विद्यार्थी | बालकः | = | लड़का | युवकः | = | नौजवान |
| अजः | = | बकरा | गजः | = | हाथी | अश्वः | = | घोड़ा |
| शुकः | = | तोता | कोकिलः | = | कोयल | काकः | = | कौवा |

## अभ्यास :-

1. **नीचे दिए गये चित्रों के लिए ठीक नाम चुनकर लिखोः-**

............ ............ ............

युवकः/बालकः/छात्रः गजः/अजः/अश्वः कोकिलः/शुकः/काकः

2. **प्रत्येक चित्र के नीचे उस का नाम संस्कृत में लिखोः-**

............ ............ ............

3. **इन संस्कृत शब्दों के अर्थ लिखोः-**

युवकः........... गजः.......... काकः..........

4. **इनके लिए संस्कृत शब्द लिखोः-**

विद्यार्थी....... बकरा........ कोयल........

## अध्यापन-संकेतः-

अध्यापक चित्रों के माध्यम से संस्कृत नामशब्दों को जानने के लिए विद्यार्थियों में रुचि पैदा करने का यत्न करें। उन्हें ऐसे कुछ और चित्र भी इकट्ठा कर के कापी में लगा कर उन के नाम संस्कृत में लिखने को कहें।

●●●

## पाठ : 2

## [ नामशब्दः प्रथमा विभक्ति, एकवचन।

## क्रियाशब्दः प्रथम पुरुष, एकवचन ]

बालकः खेलति।

युवकः हसति।

छात्रः पठति।

छात्रः लिखति।

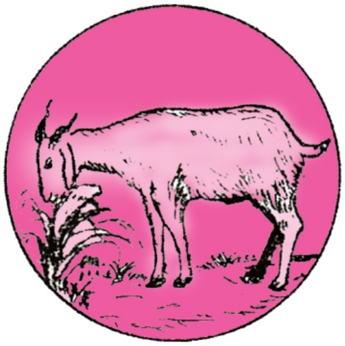

अजः चरति।

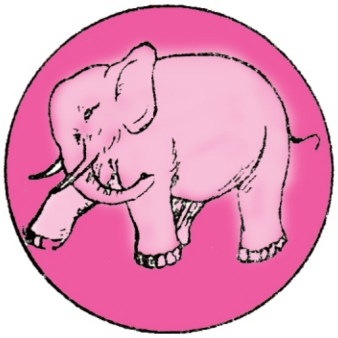

गजः चलति।

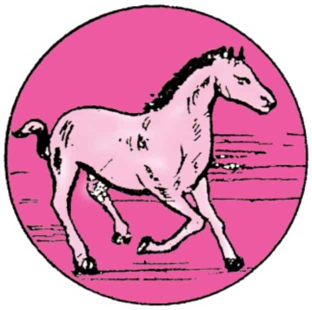

अश्वः धावति।

शुकः वदति।

काकः कायति।

कोकिलः कूजति।

## शब्दार्थः-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| खेल् | = | खेलना | खेलति | = | (वह) खेलता है |
| चल् | = | चलना | चलति | = | (वह) चलता है |
| हस् | = | हँसना | हसति | = | (वह) हँसता है |
| धाव् | = | दौड़ना | धावति | = | (वह) दौड़ता है |
| पठ् | = | पढ़ना | पठति | = | (वह) पढ़ता है |
| वद् | = | बोलना | वदति | = | (वह) बोलता है |
| लिख् | = | लिखना | लिखति | = | (वह) लिखता है |
| काय् | = | काँव-काँव करना | कायति | = | (वह) काँव-काँव करता है |
| चर् | = | चरना | चरति | = | (वह) चरता है |
| कूज् | = | कुहू-कुहू करना | कूजति | = | (वह) कुहू-कुहू करती है |

## अभ्यास :-

1. **चित्र को देख कर, नीचे दिए गए कोष्ठक से उपयुक्त शब्द चुनों, और वाक्य को पूरा करो:-**

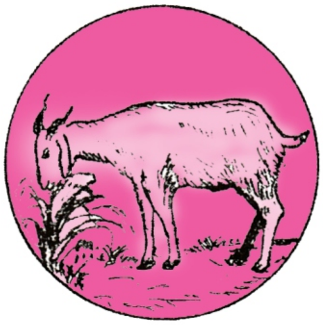

(छात्र :/ बालक: )---पठति।   (गज:/अज: )---चरति   (काक:/शुक्र: )---वदति

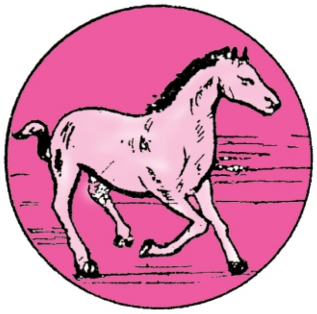

युवक:--- (खेलति/हसति)। अश्व :---(धावति/चलित)। काक:--- (कूजति/कायति)

2. **निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ सुलेख में लिखो:-**

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| बालक: खेलति। | |
| गज: चलित। | |
| कोकिल: कूजति। | |

### 3. संस्कृत बनाओः-

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| नौजवान हँसता है। | |
| बकरा चरता है। | |
| तोता बोलता है। | |

## अध्यापन-संकेतः-

विद्यार्थी पहले ही हिन्दी से परिचित हैं, इसलिए हिन्दी शब्दों के उदाहरण देकर संस्कृत शब्दों को समझाना आसान होगा। हिन्दी शब्दों को वाक्य में प्रयुक्त करते समय उनमें कुछ चिह्न लगते हैं, जैसे .... लड़का, लड़के, लड़के ने, लड़के को, लड़कों ने आदि, इसी प्रकार संस्कृत शब्दों को वाक्य में प्रयुक्त करने के लिए उनमें विभक्ति चिह्न लगाये जाते हैं, जैसे ..... बालकः, युवकः, छात्रः आदि।

संस्कृत नामशब्दों को क्रिया का कर्ता बनाने के लिए प्रथमा विभक्ति के चिह्न लगते हैं; कर्ता यदि एक है तो एकवचन का चिह्न ':' (विसर्ग) लगता है, जैसे बालकः आदि।

इसी प्रकार क्रियाशब्द के प्रथम पुरुष एकवचन में 'ति' लगता है, जैसे .... खेलति, हसति, पठति, आदि। जिस प्रकार हिन्दी में क्रियाशब्द में 'ता' चिह्न लगता है। संस्कृत में क्रियाशब्द में 'ति' चिह्न लगता है।

●●●

## पाठ : 3

## [ नामशब्द : प्रथमा विभक्ति, द्विवचन।

## क्रियाशब्द : प्रथम पुरुष, द्विवचन ]

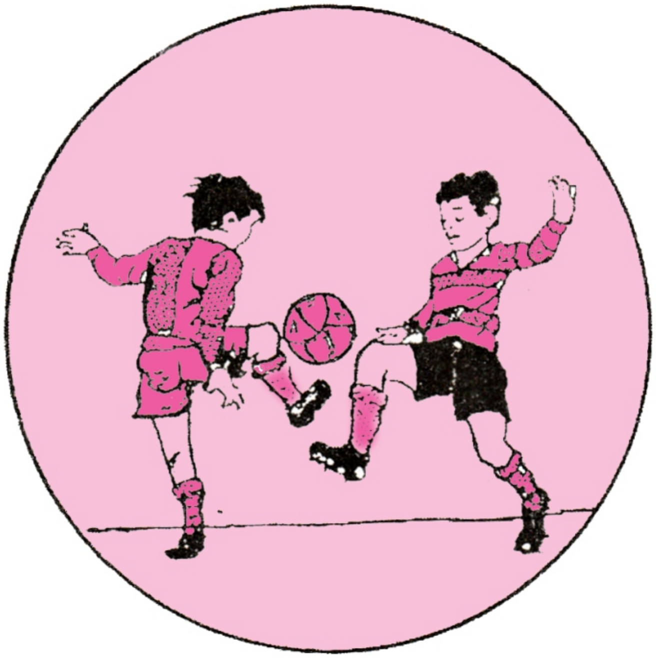

| | |
|---|---|
| बालकौ खेलतः। | युवकौ हसतः। |
| छात्रौ पठतः। | छात्रौ लिखतः। |
| अजौ चरतः। | गजौ चलतः। |
| अश्वौ धावतः। | शुकौ वदतः। |
| काकौ कायतः। | कोकिलौ कूजतः। |

### शब्दार्थ :-

बालकौ = (दो लड़के) खेलतः = (वे दो) खेलते हैं

## अभ्यास :-

1. **बालकौ, अजौ, शुकौ – इन नामशब्दों को नीचे दिए गए वाक्यों में उचित स्थान पर लिख कर, वाक्यों को पूरा करो :-**

   ........ वदतः।    ........ खेलतः।    .......... चरतः।

2. **पठतः, धावतः, कायतः – इन क्रियाशब्दों को नीचे के वाक्यों में यथास्थान लिख कर वाक्यों को पूरा करोः-**

   अश्वौ ....।    काकौ ......।    छात्रौ .....।

3. **नीचे दिए गए संस्कृत वाक्यों का अर्थ लिखोः-**

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| युवकौ हसतः।<br>कोकिलौ कूजतः।<br>गजौ चलतः। | |

4. **संस्कृत बनाओः-**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| दो विद्यार्थी लिखते हैं।<br>दो तोते बोलते हैं।<br>दो घोड़े दौड़ते हैं। | |

## अध्यापन – संकेतः-

अध्यापक विद्यार्थियों को बतायें कि जहाँ क्रिया को करने वाले, अर्थात् कर्ता, दो हों, वहाँ पर उन के नामशब्द में प्रथमा विभक्ति का द्विवचन का चिह्न 'ौ' लगता है, जैसे – बालकौ, युवकौ, छात्रौ, आदि।

वहाँ पर क्रियाशब्द में भी प्रथम पुरुष का द्विवचन का चिह्न 'तः' लगता है, जैसे– खेलतः, हसतः, लिखतः आदि।

●●●

## पाठ : 4

## [ नामशब्दः प्रथमा विभक्ति, बहुवचन।

## क्रियाशब्द : प्रथम पुरुष, बहुवचन ]

| | |
|---|---|
| बालका : खेलन्ति। | युवकाः हसन्ति। |
| छात्राः पठन्ति। | छात्राः लिखन्ति। |
| अजाः चरन्ति। | गजाः चलन्ति। |
| अश्वाः धावन्ति। | शुकाः वदन्ति। |
| काकाः कायन्ति। | कोकिलाः कूजन्ति। |

**शब्दार्थः--**

बालकाः=(बहुत) लड़के		खेलन्ति = (वे) खेलते हैं।

## अभ्यास :-

1. युवकाः, गजाः, काकाः- इन नामशब्दों को नीचे दिए गए वाक्यों में उचित स्थान पर लिख कर, वाक्यों को पूरा करोः-

....... चलन्ति। ....... कायन्ति। .......... हसन्ति।

2. लिखन्ति, कूजन्ति, धावन्ति - इन क्रियाशब्दों को नीचे दिए गए वाक्यों में यथास्थान लिखकर, वाक्यों को पूरा बनाओः-

कोकिलाः ..........। छात्राः ............। अश्वाः ........।

3. नीचे दिए गए संस्कृत वाक्यों का अर्थ लिखोः-

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| अजाः चरन्ति | |
| शुकाः वदन्ति | |
| बालकाः खेलन्ति | |

4. संस्कृत बनाओः-

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| विद्यार्थी पढ़ते हैं। | |
| कौवे काँव-काँव करते हैं। | |
| घोड़े दौड़ते हैं। | |

## अध्यापन - संकेतः-

अध्यापक विद्यार्थियों को स्पष्ट करें कि क्रिया को करने वाले कर्ता जब दो से अधिक होते हैं, तब कर्ता नामशब्द में प्रथमा विभक्ति बहुवचन का चिह्न 'ाः' लगता है, जैसे - बालकाः, युवकाः, छात्राः आदि।

उस के साथ क्रियाशब्द में भी प्रथम पुरुष बहुवचन का चिह्न 'न्ति' लगाया जाता है, जैसे- खेलन्ति, हसन्ति, पठन्ति आदि।

●●●

## पाठ : 5

## [ सर्वनाम शब्द: तद्, पुंलिंग, प्रथमा विभक्ति तीनों वचन।
## क्रियाशब्द: प्रथम पुरुष, तीनों वचन ]

बालक: गायति।

स: गायति

स: गच्छति।

स: आगच्छति।

स: खादति।

स: पिबति।

स: चूषति।

स: चर्वति।

स: गर्जति।

स: कूर्दति।

बालकौ गायत:।

तौ गायत:

बालका: गायन्ति।

ते गायन्ति।

| | |
|---|---|
| तौ गच्छतः। | ते गच्छन्ति। |
| तौ आगच्छतः। | ते आगच्छन्ति। |
| तौ खादतः। | ते खादन्ति। |
| तौ पिबतः। | ते पिबन्ति। |
| तौ चूषतः। | ते चूषन्ति। |
| तौ चर्वतः। | ते चर्वन्ति। |
| तौ गर्जतः। | ते गर्जन्ति। |
| तौ कूर्दतः। | ते कूर्दन्ति। |

**शब्दार्थः--**

| | | |
|---|---|---|
| सः = वह | तौ = वे दो | ते = वे |
| गाय् = गाना | √गम>गच्छ् = जाना | आ+√गम्>आगच्छ् = आना |
| खाद् = खाना | √पा>पिब् = पीना | चूष्=चूसना |
| चर्व् = चबाना | गर्ज् = गरजना | कूर्द् = कूदना |

**अभ्यास :-**

1. **नीचे दिए गए वाक्यों में कर्ता के स्थान पर सः, तौ, ते सर्वनामों में से उपयुक्त सर्वनाम लगाकर, वाक्यों को पूरा करोः-**

   ...... गायति। ...... गच्छतः। ..... आगच्छन्ति।

   ...... गर्जतः। ....... कूर्दन्ति। ...... चर्वति।

2. **खादति, पिबतः, चूषन्ति- इन क्रियाशब्दों में से उपयुक्त क्रिया शब्द नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में लिख कर, वाक्यों को पूरा करोः-**

   तौ .....। सः....। ते.....।

## 3. संस्कृत बनाओ :-

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| वह गाता है। | |
| वे दो जाते हैं। | |
| वे आते हैं। | |
| वे दो चूसते हैं। | |
| वे गरजते हैं। | |
| वह कूदता है। | |

## अध्यापन - संकेत:--

अध्यापक हिन्दी के उदाहरण देकर विद्यार्थियों को बतायें कि जब नामशब्द को बार-बार दोहराना न हो, तो उस नामशब्द के स्थान पर सर्वनाम शब्द का प्रयोग किया जाता है, जैसे - बालक: गायति। लड़का गाता है। स: खेलति। वह खेलता है।

अब तक पढ़े हुए सभी नामशब्दों और सर्वनाम शब्दों के रूप प्रथमा विभक्ति के सभी वचनों- एकवचन, द्विवचन, बहुवचन में लिखने को कहा जाये। उसी प्रकार, अब तक पढ़े गए सभी क्रियाशब्दों के रूप प्रथम पुरुष के एकवचन, द्विवचन, बहुवचन में लिखवा कर उनका अभ्यास करवाया जाये।

●●●

# पाठ : 6

## [ सर्वनाम शब्दः युष्मद्, प्रथमा विभक्ति एकवचन।

## क्रियाशब्दः मध्यम पुरुष, एकवचन ]

त्वम् आगच्छसि।

त्वं पठसि।

त्वं लिखसि।

त्वं चलसि।

त्वं न धावसि।

त्वं सदा हससि।

यदा त्वं खादसि।

तदा त्वं न वदसि।

त्वं कदा खेलसि ?

अधुना त्वं गायसि।

**शब्दार्थ :--**

| | | |
|---|---|---|
| त्वम् = तू | न = नहीं | सदा = हमेशा |
| यदा = जब | तदा = तब | कदा = कब |
| अधुना = अब | पठसि = (तू) पढ़ता है | लिखसि = (तू) लिखता है |

## अभ्यास :--

1. **नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित क्रियाशब्दों के साथ उचित चिह्न लगाकर वाक्यों को पूरा करोः-**

   त्वं चल .....।  त्वं पठ......।  त्वं सदा हस.......।

2. **संस्कृत बनाओः-**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| जब तू खाता है। | |
| तब तू नहीं बोलता है। | |
| अब तू गाता है। | |
| तू कब खेलता है? | |
| तू आता है। | |

## अध्यापन-संकेतः--

जिससे हम बातचीत करते हैं, उसे 'तू' या 'त्वम्' कह कर बात करते हैं, इसे ही मध्यम पुरुष का सर्वनाम कहते हैं।

अब तक पढ़ी हुई धातुओं के साथ 'सि' चिह्न लगा कर, क्रियाशब्दों के मध्यम पुरुष एकवचन के रूप का अभ्यास कराया जाये।

●●●

## पाठ : 7

## [ सर्वनाम शब्द: युष्मद्, प्रथमा विभक्ति, द्विवचन। क्रियाशब्द: मध्यम पुरुष, द्विवचन ]

प्रात: युवां पठथ:।

सायं युवां खेलथ:।

अधुना युवां भ्रमथ:।

सदा युवां हसथ:।

अद्य युवां गायथ:।

यत्र युवां विशथ:।

तत्र युवाम् उपविशथ:।

अत्र युवां खेलथ:।

युवां सर्वत्र गच्छथ:।

युवां कुत्र धावथ: ?

**शब्दार्थ :--**

| | | |
|---|---|---|
| युवाम् = तुम दो | गायथ: = (तुम दो) गाते हो | अद्य = आज |
| प्रात: = सवेरे | सायं = शाम | यत्र = जहाँ |
| तत्र = वहाँ | अत्र = यहाँ | सर्वत्र = सब जगह पर |
| कुत्र = कहाँ | भ्रम् = घूमना | उपविश् = बैठना। |
| विश् = घुसना, अंदर जाना | | |

## अभ्यास :--

1. **रेखांकित क्रियाशब्दों के साथ उचित चिह्न लगाकर, वाक्यों को पूरा करो :-**

   प्रातः युवां पठ.....।   सायं युवां खेल........।   सर्वत्र युवां गच्छ.......।

2. **नीचे दिए गए वाक्यों में उचित सर्वनाम शब्द लगाओः-**

   ......... धावथः।   .......विशथः।   भ्रमथः।

3. **संस्कृत बनाओः-**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| आज तुम दो गाते हो। | |
| हमेशा तुम दो हँसते हो। | |
| वहाँ पर तुम दो बैठते हो। | |

## अध्यापन - संकेतः--

अब तक पढ़ी हुई सभी धातुओं के साथ मध्यम पुरुष के द्विवचन के चिह्न 'थः' को लगाकर क्रियाशब्दों के रूप लिखने को कहा जाये।

●●●

## पाठ : 8

## [ सर्वनाम शब्दः युष्मद्, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन।
## क्रियाशब्दः मध्यम पुरुष, बहुवचन ]

यूयम् अपि हसथ।

यूयं सदा नन्दथ।

यूयम् एव गायथ।

अधुना यूयं पठथ।

यूयं कदा खेलथ?

अत्र यूयम् आगच्छथ।

यत्र यूयं तिष्ठथ।

तत्र यूयम् उपविशथ।

यूयं कुत्र गच्छथ?

सर्वत्र यूयं भ्रमथ।

### शब्दार्थ :--

| | | |
|---|---|---|
| यूयम् = तुम | हसथ = (तुम) हँसते हो | अपि = भी |
| एव = ही | नन्द् = खुश होना | तिष्ठ् = ठहरना |

## अभ्यास :--

1. **नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित क्रियाशब्दों के साथ उचित चिह्न लगाकर, वाक्यों को पूरा करोः-**

   अधुना यूयं पठ ..........।  यत्र यूयं तिष्ठ............।

   यूयम् अपि हस..........।  सर्वत्र यूयं भ्रम............।

2. **नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में उपयुक्त सर्वनाम शब्द भरकर, वाक्यों को पूरा करोः-**

   ....... एव गायथ।  ........ आगच्छथ।  ....... खेलथ।

3. **संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अर्थ लिखोः-**

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| यूयं सदा नन्दथ। | |
| तत्र यूयम् उपविशथ। | |
| यूयं कुत्र गच्छथ ? | |

4. **संस्कृत बनाओः--**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| तुम भी हँसते हो। | |
| तुम कब खेलते हो ? | |
| अब तुम पढ़ते हो। | |

## अध्यापन - संकेतः--

अध्यापक विद्यार्थियों को अब तक पढ़ी हुई सभी धातुओं के साथ 'थ' चिह्न लगाकर, क्रियाशब्दों के रूप मध्यम पुरुष के बहुवचन में कॉपी पर लिखने को कहें।

●●●

## पाठ : 9

## [ सर्वनाम शब्दः अस्मद्, प्रथमा विभक्ति, एकवचन। क्रियाशब्दः उत्तम पुरुष, एकवचन ]

अहं प्रातः एव भ्रमामि।

सायम् अहं खेलामि।

अहं तत्र न गच्छामि।

अहम् अत्र उपविशामि।

अधुना अहं गायामि।

प्रातः अहं पठामि लिखामि च।

सायम् अहं खेलामि कूर्दामि च।

अहं गच्छामि आगच्छामि च।

अधुना अहं खादामि पिबामि च।

अहं सदा नन्दामि हसामि च।

**शब्दार्थ :--**

अहम् = मैं

गायामि = (मैं) गाता हूँ

**अभ्यास :-**

1. **नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित क्रियाशब्दों के साथ उचित चिह्न लगाकर, वाक्यों को पूरा करो:-**

   अहं गाय............।    अहं गच्छ............। अहं नन्द............।

2. **नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में उपयुक्त सर्वनाम शब्द भरकर, वाक्यों को पूरा करो:-**

............ भ्रमामि। ............ उपविशामि ............ कूर्दामि।

3. **संस्कृत वाक्यों का अर्थ लिखो:-**

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| अहम् अत्र उपविशामि।<br>अहं गच्छामि आगच्छामि च।<br>अहं सदा नन्दामि। | |

4. **संस्कृत बनाओ:-**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| शाम को मैं खेलता हूँ।<br>मैं वहाँ पर नहीं जाता हूँ।<br>अब मैं खाता हूँ और पीता हूँ। | |

## अध्यापन-संकेत:-

अध्यापक विद्यार्थियों को बतायें कि बात करने वाला स्वयं को 'मैं' या 'अहम्' कहता है। यह उत्तमपुरुष का सर्वनाम है।

वाक्य में इस के साथ आने वाली क्रिया में 'आमि' ='ामि', चिह्न लगाया जाता है, जैसे --- पठामि, लिखामि, गायामि आदि। अध्यापक अब तक पढ़ाई गई सभी धातुओं के साथ उत्तम पुरुष के एकवचन के चिह्न 'ामि' को ब्लैक बोर्ड पर लिखकर समझाएँ तथा विद्यार्थियों को अपनी कॉपी में लिखने को कहें।

●●●

## पाठ : 10

## [ सर्वनाम शब्दः अस्मद् प्रथमा विभक्ति, द्विवचन।
## क्रियाशब्दः उत्तम पुरुष, द्विवचन ]

तत्र आवां धावावः।

अत्र आवां खेलावः।

आवां कुत्र भ्रमावः ?

यत्र आवां गच्छावः।

आवां सर्वत्र नन्दावः।

प्रातः आवां कुत्रापि न गच्छावः।

तदा आवां पठावः लिखावः च।

सायम् आवां खेलावः कूर्दावः च।

यत्र आवां विशावः।

तत्र आवाम् उपविशावः।

**शब्दार्थ :-**

आवाम् = हम दो खेलाव: = (हम दो) खेलते हैं कुत्रापि = कहीं भी

**अभ्यास :--**

1. **नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित क्रियाशब्दों में उचित चिह्न लगाकर, वाक्यों को पूरा करो:-**

   आवाम् उपविश..... । आवां लिख........ । आवां धाव......... ।

2. **नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में उपयुक्त सर्वनाम शब्द भरकर, वाक्यों को पूरा करो:-**

   ............. खेलाव: । ............. भ्रमाव: । ............. नन्दाव: ।

3. **संस्कृत वाक्यों के अर्थ लिखो:-**

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| प्रात: आवां कुत्रापि न गच्छाव: । | |
| तदा आवां पठाव: । | |
| यत्र आवां विशाव: । | |

4. **संस्कृत बनाओ:-**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| जहाँ पर हम दो जाते हैं। | |
| वहाँ पर हम दो बैठते हैं। | |
| यहाँ पर हम दो खेलते हैं। | |

**अध्यापन-संकेत:-**

अब तक पढ़ी हुई सभी धातुओं के साथ = 'ाव:' चिह्न लगाकर, क्रियाशब्दों के उत्तमपुरुष द्विवचन में रूप बनाने को कहा जाये।

●●●

## पाठ : 11

## [ सर्वनाम शब्दः अस्मद्, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन। क्रियाशब्दः उत्तम पुरुष, बहुवचन ]

वयम् अपि आगच्छाम :।

वयम् अत्र एव उपविशामः।

अद्य वयं न धावामः।

अधुना वयं तिष्ठामः।

वयं सायम् एव खेलामः।

वयम् अत्र पठामः लिखामः च।

वयं तत्र खादामः पिबामः च।

वयं सदा नन्दामः हसामः च।

वयं कुत्रापि न गच्छामः।

वयम् एव वदामः।

**शब्दार्थ : –**

वयम् = हम    आगच्छामः = (हम) आते हैं

**अभ्यास : ––**

1. **नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित क्रियाशब्दों के साथ उपयुक्त चिह्न लगाकर, वाक्यों को पूरा करोः–**

   वयम् आगच्छ..... ।    वयं तिष्ठ....... ।    वयं धाव...... ।

2. **नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में उपयुक्त सर्वनाम शब्द भरकर, वाक्यों को पूरा करोः–**

   ........ उपविशामः ।    ........ हसामः ।    ........ खेलामः ।

3. **नीचे दिए गए संस्कृत वाक्यों का अर्थ लिखोः–**

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| वयम् अत्र पठामः । | |
| वयं तत्र खादामः । | |
| वयं सदा नन्दामः । | |

4. **संस्कृत बनाओः–**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| हम यहाँ पर ही बैठते हैं। | |
| आज हम नहीं दौड़ते हैं। | |
| हम कहीं भी नहीं जाते हैं। | |

**अध्यापन–संकेतः–**

1. अब तक पढ़ी हुई सभी धातुओं के साथ 'आमः' = 'ामः' चिह्न लगाकर, क्रियाशब्दों के रूप उत्तम पुरुष बहुवचन में बनाने का अभ्यास कराया जाये।
2. किन्हीं दस धातुओं के रूप प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष, उत्तमपुरुष के एकवचन, द्विवचन, और बहुवचन में लिखवाए जायें।

●●●

# पाठ : 12

## [ विशेषण शब्दः अकारान्त, पुलिंग, प्रथमा विभक्ति ]

श्वेत: अश्व: धावति।

स्वस्थ: बालक: खेलति।

प्रसन्न: युवक: हसति।

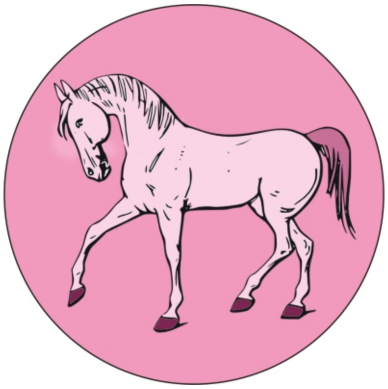

श्वेतौ अश्वौ धावत:।

स्थूलौ गजौ चलत:।

चंचलौ वानरौ कूर्दत:।

श्वेता: अश्वा: धावन्ति।

कृष्णा: काका: कायन्ति।

कृष्णा: कोकिला: कूजन्ति।

हरिता: शुका: वदन्ति।

**शब्दार्थ :--**

| | | |
|---|---|---|
| श्वेत = सफेद | स्वस्थ = तन्दरुस्त | प्रसन्न = खुश |
| स्थूल = मोटा | चंचल = नटखट | वानर = बंदर |
| कृष्ण = काला | हरित = हरा | |

**अभ्यास :--**

1. **नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित क्रियाशब्दों के साथ उचित चिह्न लगाकर, वाक्यों को पूरा करो:-**

   श्वेतौ **अश्वौ** धाव .........। स्वस्थ: **बालक:** खेल .........।
   हरिता: **शुका:** वद.........।

**2. रेखांकित नामशब्दों में उचित चिह्न लगाकर वाक्यों को पूरा करोः-**

प्रसन्नः युवक हसति। कृष्णाः काक कायन्ति।स्थूलौ गज चलतः।

**3. रेखांकित विशेषण शब्दों में उचित चिह्न लगाकर, वाक्यों को पूरा करोः-**

श्वेत अश्वः धावति। चंचलौ वानरौ कूर्दतः। कृष्णः कोकिलाः कूजन्ति।

**4. निम्नलिखित संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अर्थ लिखोः-**

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| हरिताः शुकाः वदन्ति।<br>श्वेतौ अश्वौ धावतः।<br>स्वस्थः बालकः खेलति। | |

**5. संस्कृत बनाओः-**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| सफेद घोड़ा दौड़ता है।<br>दो चंचल वानर कूदते हैं।<br>दो मोटे हाथी चलते हैं। | |

**अध्यापन-संकेतः-**

1. उदाहरण देकर विद्यार्थियों को समझाया जाये कि **व्यक्तियों और वस्तुओं ( नामशब्दों ) के रंग, रूप और स्वभाव आदि गुणों की विशेषता को बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं,** जैसे - श्वेत, कृष्ण, हरित, स्थूल, चंचल आदि।
2. नामशब्दों और उनके विशेषण शब्दों में एक समान ही लिंग, विभक्ति, और वचन के चिह्न लगते हैं, जैसा कि इस पाठ के वाक्यों में सभी नामशब्द पुंलिंग प्रथमा विभक्ति में हैं, और विशेषण शब्द भी उन्हीं के समान पुंलिंग प्रथमा विभक्ति में हैं। एकवचन के नामशब्द के साथ विशेषण शब्द एकवचन में हैं। इसी प्रकार द्विवचन के नामशब्द के साथ विशेषण शब्द भी द्विवचन में, और बहुवचन के नामशब्द के साथ विशेषण शब्द भी बहुवचन में हैं। जैसे - स्वस्थः बालकः। स्थूलौ गजौ। श्वेताः हंसाः।

●●●

## पाठ : 13

## [ नामशब्दः अकारान्त, पुलिंग, द्वितीया विभक्ति ]

वीरसिंहः लेखं लिखति।

राजेशः पाठं पठति।

राकेशः अपूपं खादति।

अहं मयूरं पश्यामि।

प्रदीपः लेखौ लिखति।

सन्दीपः पाठौ पठति।

त्वम् अपूपौ खादसि।

जार्जः पाठान् पठति।

रहीमः लेखान् लिखति।

वयम् अपूपान् खादामः।

**शब्दार्थः--**

| | | |
|---|---|---|
| पाठम् = पाठ को | पाठौ = दो पाठों को | पाठान् = पाठों को |
| अपूपम् = मालपूए को | मयूरम् = मोर को | पश्य् = देखना |
| लेखम् = लेख को, निबन्ध को | | |

**अभ्यास :--**

1. **लेखं, पाठौ, अपूपान् --- इन नामशब्दों को नीचे दिए गए उपयुक्त रिक्त स्थानों में लिख कर, वाक्यों को पूरा करोः--**

   वीर सिंहः--- लिखति। सन्दीपः--- पठति। वयम्--- खादामः।

**2. नीचे दिए गए रेखांकित नामशब्दों में उचित चिह्न लगाकर वाक्यों को पूरा करो:-**

अहं <u>मयूर</u> पश्यामि।  प्रदीप: <u>लेख</u> लिखति।  जार्ज:- <u>पाठ</u> पठति।

**3. संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अर्थ लिखो:-**

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| रहीम: लेखान् लिखति।<br>त्वम् अपूपौ खादसि।<br>राजेश: पाठं पठति। | |

**4. संस्कृत बनाओ:-**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| प्रदीप दो लेखों को लिखता है।<br>जार्ज पाठों को पढ़ता है।<br>मैं मोर को देखता हूँ। | |

## अध्यापन - संकेत:--

1. अध्यापक विद्यार्थियों को समझाएं कि **क्रिया के विषय को कर्म कहते हैं। कर्म नामशब्द में द्वितीया विभक्ति का चिह्न लगाया जाता है।** जैसे 'वह पाठ को पढ़ता है' हम हिन्दी के वाक्य में 'पढ़ना' क्रिया का कर्म 'पाठ' है, और 'पाठ' नामशब्द के साथ 'को' चिह्न लगाया गया है। इसी प्रकार 'स: पाठं पठति' इस संस्कृत वाक्य में 'पाठं' नामशब्द 'कर्म' है और इस नामशब्द में द्वितीया विभक्ति का चिह्न लगा हुआ है।
2. संस्कृत में द्वितीया विभक्ति के चिह्न ये हैं - एकवचन में 'म्' = 'ं' द्विवचन में 'औ' = 'ौ'; और बहुवचन में 'आन्' ='ान्'। जैसे - 'पाठ' नामशब्द के द्वितीया विभक्ति के एकवचन द्विवचन, और बहुवचन में रूप क्रमश: ये हैं - पाठम्, पाठौ, पाठान्।
3. अध्यापक विद्यार्थियों को इसी प्रकार के दस नामशब्दों के रूप द्वितीया विभक्ति के सभी वचनों में लिखने को कहें।

●●●

## पाठ : 14

# [ नामशब्दः विशेषण शब्दः अकारान्त, पुलिंग, द्वितीया विभक्ति ]

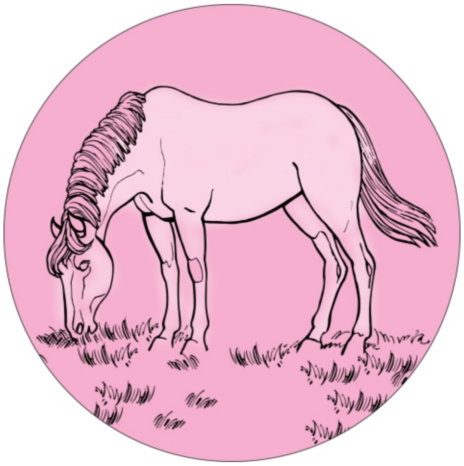

अश्वः हरितं घासं खादति।

जार्जः निजं पाठं पठति।

वीरसिंहः सुन्दरं लेखं लिखति।

जनकः प्रियौ पुत्रौ पश्यति।

त्वं श्वेतौ कपोतौ पश्यसि।

अहं कृष्णौ अजौ नयामि।

दशरथः प्रियान् पुत्रान् पश्यति।

युवां चंचलान् वानरान् पश्यथः।

सैनिकाः श्वेतान् अश्वान् नयन्ति।

वयं मनोहरान् मयूरान् पश्यामः।

**शब्दार्थः-**

| | | |
|---|---|---|
| घास = घास | निज = अपना | सुंदर = सुन्दर, खूबसूरत |
| जनक = पिता | प्रिय = प्यारा | पुत्र = बेटा |
| नय = ले जाना | सैनिक = फौजी | मनोहर = मन को भाने वाले सुन्दर |
| कपोत = कबूतर | | |

## अभ्यासः--

1. **हरितं, प्रियौ, चंचलान् -- इन विशेषण शब्दों को नीचे दिए गए उचित रिक्त स्थानों में लिख कर, वाक्यों को पूरा करो--**

   युवां ...... वानरान् पश्यथः। जनकः .... पुत्रौ पश्यति। अश्वः ... घासं खादति।

2. **नीचे दिए गए रेखांकित विशेषण शब्दों में उचित चिह्न लगाओः-**

   वयं <u>मनोहर</u> मयूरान् पश्यामः। अहं <u>कृष्ण</u> अजौ नयामि। जार्जः <u>निज</u> पाठं पठति।

3. **संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अर्थ लिखोः-**

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| सैनिकाः श्वेतान् अश्वान् नयन्ति।<br>वीरसिंहः सुन्दरं लेखं लिखति।<br>त्वं श्वेतौ कपोतौ पश्यसि। | |

4. **संस्कृत बनाओः-**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| दशरथ प्यारे पुत्रों को देखता है।<br>मैं दो काले बकरों को ले जाता हूँ।<br>घोड़ा हरी घास को खाता है। | |

## अध्यापन-संकेतः-

1. विद्यार्थियों को यह नियम स्मरण कराया जाये कि विशेषण शब्दों में वहीं लिंग, विभक्ति और वचन होता है, जो उन के नामशब्दों में होता है, जैसा कि इस पाठ के वाक्यों में विशेषण शब्द और नामशब्द, दोनों ही, पुंलिंग द्वितीया विभक्ति के क्रमशः एकवचन, द्विवचन और बहुवचन में है, यथा- हरितं घासं, श्वेतौ कपोतौ, श्वेतान् अश्वान्।

●●●

# पाठ : 15

## [ नामशब्दः अकारान्त, नपुंसकलिंग।
## सर्वनाम शब्दः तद्, नपुंसकलिंग, प्रथमा विभक्ति ]

| | |
|---|---|
| फलं पतति। | तत् पतति। |
| पुष्पं विकसति। | तत् विकसति। |
| कमलं रोहति। | तत् रोहति। |

| | |
|---|---|
| फले पततः। | ते पततः। |
| पुष्पे विकसतः। | ते विकसतः। |
| कमले रोहतः। | ते रोहतः। |

| | |
|---|---|
| फलानि पतन्ति | तानि पतन्ति। |
| पुष्पाणि विकसन्ति। | तानि विकसतः। |
| कमलानि रोहन्ति। | तानि रोहन्ति। |

### शब्दार्थ :--

| | | |
|---|---|---|
| फलम् =एक फल | फले = दो फल | फलानि = (बहुत) फल |
| तत् = वह | ते = वे दो | तानि = वे (बहुत) |
| पत् = गिरना | विकस् = खिलना | रोह् = उगना |
| पुष्प = फूल | कमल = कमल | |

## अभ्यास :--

1. **नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित नामशब्दों में उचित चिह्न लगाओः-**

   <u>फल</u> पतति।　　　　<u>पुष्प</u> विकसतः।　　　　<u>कमल</u> रोहन्ति।

2. **नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में तत्, ते तानि सर्वनामों में से उपयुक्त सर्वनाम लगाकर वाक्यों को पूरा करोः-**

   ............ विकसति।　　........... रोहतः।　　........... पतन्ति।

3. **रोहति, पततः, विकसन्ति--- उन क्रियाशब्दों में से उपयुक्त क्रियाशब्द नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में भर कर, वाक्यों को पूरा करोः-**

   ते ...........।　　　　तत्..........।　　　　तानि..............।

4. **संस्कृत बनाओ।**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| फूल खिलता है।<br>दो कमल उगते हैं।<br>फल गिरते हैं। | |

## अध्यापन-संकेतः-

1. विद्यार्थियों को यह बताया जाये कि संस्कृत में कुछ नामशब्द पुंलिंग में होते हैं, जैसे - बालक, युवक, छात्र आदि। और कुछ नामशब्द नपुंसकलिंग में होते हैं, जैसे-फल, पुष्प, कमल आदि।

   पुंलिंग नामशब्दों के लिए प्रथमा विभक्ति के चिह्न हम पहले ही पढ़ चुके हैं, वे हैं : , ौ, ाः, । इन चिह्नों के लगाने से पुंलिंग नामशब्दों के रूप बनते हैं--- बालकः, बालकौ, बालकाः।

   किन्तु नपुंसकलिंग नामशब्दों के लिए प्रथमा विभक्ति के चिह्न भिन्न हैं, वे हैं.. म्, े, ानि। इन चिह्नों के लगाने से नुपंसकलिंग नामशब्दों के रूप बनते हैं - फलम्, फले, फलानि। कमलम् कमले, कमलानि।

2. सर्वनाम के बारे में हम पहेल ही पाठ 5 में पढ़ चुके हैं कि वे नामशब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। सर्वनाम 'तद्' के पुंलिंग में ये रूप होते हैं --- सः, तौ, ते और नपुंसकलिंग में 'तद्' सर्वनाम के रूप बनते हैं--- तत् ते, तानि।

●●●

## पाठ : 16

| [ नामशब्द-सर्वनाम-विशेषण-शब्द नपुंसकलिंग, प्रथमा विभक्ति ] | [ नामशब्द-सर्वनाम-विशेषण-शब्द नपुंसकलिंग, द्वितीया विभक्ति ] |
|---|---|

| | |
|---|---|
| दुग्धं मधुरं भवति। | बालकः मधुरं दुग्धं पिबति। |
| तत् जलं स्वच्छं भवति। | अहं स्वच्छं जलं पिबामि। |
| ते वस्त्रे मलिने भवतः। | रजकः मलिने वस्त्रे नयति। |
| ते फले पक्वे भवतः। | त्वं पक्वे फले चूषसि। |
| तानि हरितानि पत्राणि पतन्ति। | अजाः हरितानि पत्राणि चर्वन्ति। |
| तानि श्वेतानि पुष्पाणि विकसन्ति। | यूयं श्वेतानि पुष्पाणि जिघ्रथ। |
| तत्र नीलानि कमलानि रोहन्ति। | वयं तत्र नीलानि कमलानि पश्यामः। |

### शब्दार्थ :--

| | | |
|---|---|---|
| दुग्धम् (नपुं) = दूध | मधुर (विशेषण) = मीठा | भव् = होना |
| जलम् (नपुं) = पानी | स्वच्छ (विशेषण) = साफ | रजकः = धोबी |
| वस्त्रम् (नपुं) = कपड़ा | मलिन (विशेषण) = मैला | पक्व = पका हुआ |
| पत्रम् (पुं) = पत्ता | जिघ्र = सूँघना | |
| नील (विशेषण) = नीला | | |

## अभ्यास :--

1. **नीचे दिए गए रेखांकित शब्दों में उचित चिह्न लगाकर, वाक्यों को पूरा करो:-**

दुग्धं मधुर भवति। अहं स्वच्छ जलं पिबामि।

ते वस्त्रे मलिन भवत:। वयं तत्र नीलानि कमल पश्याम:।

2. **नीचे दिए गए संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अर्थ लिखो:-**

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| अजा: हरितानि पत्राणि चर्वन्ति।<br>त्वं पक्वे फले चूषसि।<br>रजक: मलिने वस्त्रे नयति। | |

3. **संस्कृत बनाओ।**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| दूध मीठा होता है।<br>वहां पर नीले कमल उगते हैं।<br>मैं स्वच्छ जल पीता हूँ। | |

## अध्यापन - संकेत:-

1. विद्यार्थियों को यह बताया जाये कि नपुंसकलिंग नामशब्दों के रूप प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों में एक समान होते हैं। उदाहरण के लिए इस पाठ में प्रथमा विभक्ति और द्वितीया विभक्ति के नपुंसकलिंग नामशब्दों का प्रयोग आमने-सामने के वाक्यों में किया गया है, ताकि विद्यार्थी आसानी से तुलना करके उन्हें समझ सकें।

# पाठ : 17

## [ नामशब्दः विशेषण शब्दः पुलिंग/नपुंसकलिंग, तृतीया विभक्ति ]

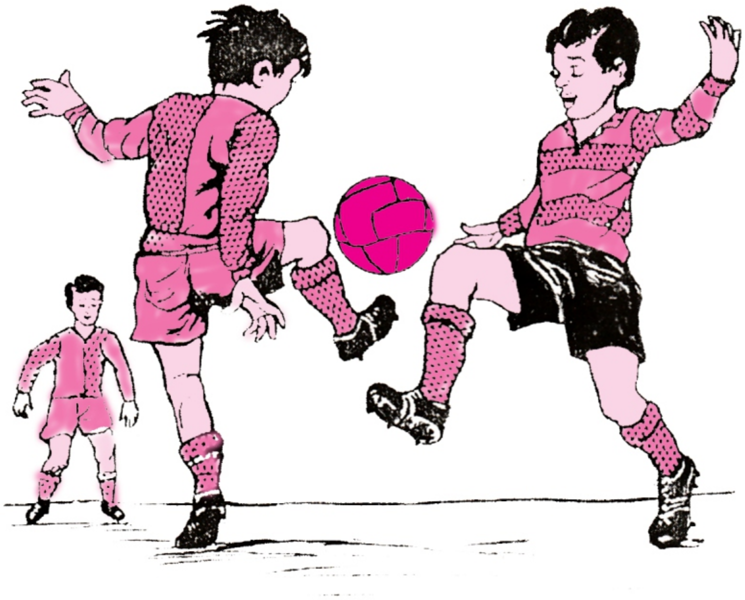

बालकाः कन्दुकेन खेलन्ति।

कृषकः जलेन क्षेत्रं सिंचति।

अहं श्वेतेन अश्वेन ग्रामं गच्छामि।

युवकः दक्षिणेन हस्तेन दण्डं धरति।

रथः चक्राभ्यां चलति।

सः पादाभ्याम् उपवनं गच्छति।

अहं नेत्राभ्यां पश्यामि।

अजः दन्तैः घासं चर्वति।

कृषकाः खनित्रैः क्षेत्राणि खनन्ति।

बालकाः बालकैः सह खेलन्ति।

## शब्दार्थ :-

| | |
|---|---|
| कन्दुकः (पुं.) = गेंद | कृषकः (पुं.) = किसान |
| सिंच् = सींचना | ग्रामः (पुं.) = गाँव |
| दक्षिण (विशेषण) = दाहिना | हस्तः (पुं.) = हाथ |
| दण्डः (पुं.) = डंडा | धर् = पकड़ना |
| रथः (पुं.) = रथ | चक्रम् (नपुं.) = पहिया |
| पादः (पुं.) = पैर | दन्तः (पुं.) = दांत |
| उपवनम् (नपुं.) = बाग | नेत्रम् (नपुं.) = आँख |
| क्षेत्रम् (नपुं.) = खेत | खनित्रम् (नपुं.) = फावड़ा, कुदाल, खुर्पा |
| खन् = खोदना | सह् (अव्यय) = साथ |

## अभ्यास :-

1. **कन्दुकेन, नेत्राभ्याम्, दन्तैः....... इन नाम शब्दों को नीचे दिए गए वाक्यों में उचित रिक्त स्थानों पर रख कर वाक्यों को पूरा करोः-**

   बालकाः ...... खेलन्ति। अहं ....... पश्यामि। अजः ...... घासं चर्वति।

2. **नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित नामशब्दों के साथ उचित चिह्न लगाओः-**

   रथः चक्र चलति।        कृषकाः खनित्र क्षेत्राणि खनन्ति।

   कृषकः जल क्षेत्रं सिंचति।

3. **नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित विशेषण शब्दों के साथ उचित चिह्न लगाओः-**

   युवकः दक्षिण हस्तेन दण्डं धरति।     अहं श्वेत अश्वेन ग्रामं गच्छामि।

## 4. संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अर्थ लिखो:-

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| कृषक: जलेन क्षेत्रं सिंचति। | |
| स: पादाभ्याम् उपवनं गच्छति। | |
| बालका: बालकै: सह खेलन्ति। | |

## 5. संस्कृत बनाओ:

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| मैं दो आँखों से देखता हूँ। | |
| बकरा दाँतों से घास को चबाता है। | |
| मैं सफेद घोड़े से गाँव को जाता हूँ। | |

## अध्यापन- संकेत:-

1. क्रिया जिस साधन से की जाती है, या जिस के साथ की जाती है, उस साधन नामशब्द में तृतीया विभक्ति के चिह्न लगते हैं। अध्यापक ऊपर से इस पाठ के वाक्यों से उदाहरण देकर विद्यार्थियों को यह बात समझायें।
2. तृतीया विभक्ति के चिह्न ये हैं --- एकवचन में 'एन:' =' ेन:', यथा 'अश्वेन:'। द्विवचन में 'आभ्याम्' यथा 'अश्वाभ्याम्'। बहुवचन में 'ऐ:' = ' ै :', यथा 'अश्वै:'।
3. पुलिंग और नपुंसकलिंग नामशब्दों के लिए तृतीया विभक्ति के चिह्न एक समान हैं। उदाहरण के लिए :--

   पुलिंग नामशब्द 'बालक:' बालकेन बालकाभ्याम् बालकै:

   नपुंसकलिंग नामशब्द 'चक्र': चक्रेण चक्राभ्याम् चक्रै:
4. हम पहले ही पढ़ चुके हैं कि नामशब्द के साथ लगने वाले विशेषण शब्द में भी उसी के समान विभक्ति चिह्न लगते हैं, जैसे---

   'पुं.' श्वेतेन अश्वेन। श्वेताभ्याम् अश्वाभ्याम्। श्वेतै: अश्वै:।

   'नपुं.' मधुरेण फलेन। मधुराभ्यां फलाभ्याम्। मधुरै: फलै:।

## पाठ : 18

# [ नामशब्द, विशेषण शब्दः पुलिंग/ नपुंसकलिंग, चतुर्थी विभक्ति ]

अहं प्रातः भ्रमणाय उपवनं गच्छामि।

प्रातः भ्रमणं सुखाय भवति।

छात्राः पठनाय विद्यालयं गच्छन्ति।

त्वं प्रियाय बालकाय दुग्धम् आनयसि।

स्वर्णकारः कर्णाभ्यां कुण्डले आनयति।

जनकः प्रियाभ्यां पुत्राभ्यां कन्दुकौ यच्छति।

छात्राः पुस्तकेभ्यः आपणं गच्छन्ति।

मालाकारः जनेभ्यः पुष्पाणि आनयति।

वयं मधुरेभ्यः फलेभ्यः उपवनं गच्छामः।

अध्यापकः नवीनेभ्यः छात्रेभ्यः पुस्तकानि यच्छति।

**शब्दार्थ :-**

भ्रमणम् (नपुं.) = घूमना, सैर

पठनम् (नपुं.) = पढ़ना, पढाई

आनय् = लाना

कर्णः (पुं.) = कान

यच्छ् = देना

आपणः (पुं.) = दुकान

जनः (पुं.) = लोग

नवीन (विशेषण) = नया

सुखम् (नपुं.) = सुख, आराम

विद्यालयः (पुं.) = स्कूल

स्वर्णकारः (पुं.) = सुनार

कुण्डलम् (नपुं.) = कान का गहना

पुस्तकम् (नपुं.) = किताब

मालाकारः (पुं.) = माली

अध्यापकः (पुं.) = अध्यापक,

**अभ्यास :--**

1. **जनेभ्यः, कर्णाभ्याम्, सुखाय -- इन नाम शब्दों को नीचे के वाक्यों में उचित रिक्त स्थानों में लिख कर, वाक्यों को पूरा करो:-**

   प्रातः भ्रमणं.......... भवति।     मालाकार : ......... पुष्पाणि आनयति।

   स्वर्णकार : ...... कुण्डले आनयति।

2. **नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित नामशब्दों के साथ उचित चिह्न लगाओ:-**

   छात्राः पठन विद्यालयं गच्छन्ति।     छात्राः पुस्तक आपणं गच्छन्ति।

   स्वर्णकारः कर्ण कुण्डले आनयति।

3. **नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित नामशब्दों में उचित चिह्न लगाओ:-**

   त्वं प्रिय बालकाय दुग्धम् आनयसि।

   जनकः प्रिय पुत्राभ्यां कन्दुकौ यच्छति।

   वयं मधुर फलेभ्यः उपवनं गच्छामः।

4. **संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अर्थ लिखोः-**

| **संस्कृत वाक्य** | **हिन्दी अर्थ** |
|---|---|
| अहं प्रातः भ्रमणाय उपवनं गच्छामि।<br>स्वर्णकारः कर्णाभ्यां कुण्डले आनयति।<br>अध्यापकः नवीनेभ्यः छात्रेभ्यः पुस्तकानि यच्छति। | |

5. **संस्कृत बनाओः-**

| **हिन्दी वाक्य** | **संस्कृत वाक्य** |
|---|---|
| सवेरे घूमना सुख के लिए होता है।<br>हम मीठे फलों के लिए बाग को जाते हैं।<br>पिता दो प्यारे बेटों के लिए दो गेंदों को देता है। | |

## अध्यापन-संकेतः--

अध्यापक इस पाठ के वाक्यों से उदाहरण देकर विद्यार्थी को चतुर्थी विभक्ति के अर्थ और प्रयोग को समझाएं कि **क्रिया को जिस प्रयोजन के लिए किया जाता है, उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति के चिह्न लगाये जाते हैं।**

चतुर्थी विभक्ति के चिह्न ये हैं -- एकवचन में 'आय' = 'ाय', द्विवचन में 'आभ्याम्' 'ाभ्याम्' और बहुवचन में 'एभ्यः' = 'ेभ्यः' यथा -- बालकाय, बालकाभ्याम्, बालकेभ्यः।

पुलिंग और नपुंसकलिंग नामशब्दों के लिए चतुर्थी विभक्ति के चिह्न एक समान हैं, जैसे-

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पुं. | अश्व | अश्वाय | अश्वाभ्याम् | अश्वेभ्यः |
| नपुं. | फल | फलाय | फलाभ्याम् | फलेभ्यः |

विशेषण शब्द अपने-अपने नामशब्दों के समान ही रूप ग्रहण करते हैं, यथा

(पुं.) = प्रियाय पुत्राय, प्रियाभ्यां पुत्राभ्याम, प्रियेभ्यः पुत्रेभ्यः।

(नपुं.) = मधुराय फलाय, मधुराभ्यां फलाभ्याम, मधुरेभ्यः फलेभ्यः।

## पाठ : 19

## [ नामशब्द, विशेषण शब्द : पुलिंग/ नपुंसकलिंग, पंचमी विभक्ति ]

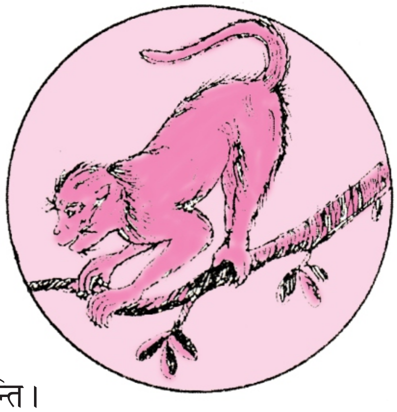

वानरः पादपात् कूर्दति।

अहं ग्रामात् आगच्छामि।

त्वम् उपवनात् फलानि आनयसि।

छात्रः निजात् गृहात् विद्यालयं गच्छति।

कर्णाभ्यां कुण्डले पततः।

नेत्राभ्याम् अस्त्राणि पतन्ति।

शुष्काभ्यां पादपाभ्यां पत्राणि पतन्ति।

पर्वतेभ्यः नदाः निस्सरन्ति।

पादपेभ्यः खगाः उत्पतन्ति।

सैनिकाः श्वेतेभ्यः अश्वेभ्यः अवतरन्ति।

**शब्दार्थ :--**

पादपः (पुं.) = पेड़, वृक्ष गृहम् (नपुं.) = घर अस्त्रम् (नपुं.) = आँसू

शुष्क (विशेषण) = सूखा पर्वतः (पुं.) = पहाड़ नदः (पुं.) = दरिया

निस्सर् = निकलना खगः (पुं.) = पक्षी उत्पत् = उड़ना

अवतर् = उतरना

**अभ्यास :--**

1. **पादपात् कर्णाभ्यां, पर्वतेभ्यः-- इन नामशब्दों को नीचे के वाक्यों में उचित रिक्त स्थानों में लिखकर, वाक्यों को पूरा करो:-**

   ........ नदाः निस्सरन्ति। ........ कुण्डले पततः। वानरः......... कूर्दति।

2. **नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित नामशब्दों के साथ उचित चिह्न लगाओः**

   पादप खगाः उत्पतन्ति। नेत्र अस्त्राणि पतन्ति। त्वम् उपवन फलानि आनयसि।

3. **नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित नामशब्दों में उचित चिह्न लगाओ:-**

छात्र: निज गृहात् विद्यालयं गच्छति।    शुष्क पादपाभ्यां पत्राणि पतन्ति।

सैनिका: श्वेत अश्वेभ्य: अवतरन्ति।

4. **संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अर्थ लिखो:-**

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| अहं ग्रामात् आगच्छामि।<br>नेत्राभ्याम् अस्त्राणि पतन्ति।<br>पादपेभ्य: खगा: उत्पतन्ति। | |

5. **संस्कृत बनाओ:-**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| तू बाग से फलों को लाता है।<br>दो सूखे पेड़ों से पत्ते गिरते हैं।<br>पहाड़ों से दरिया निकलते हैं। | |

## अध्यापन-संकेत:-

1. ऊपर के वाक्यों से उदाहरण देकर विद्यार्थी को यह स्पष्ट किया जाये कि कई बार वाक्यों में क्रिया किसी स्थान से अलग होने का भाव प्रकट करती है, जैसे-- घर से जाना, गाँव से आना, पेड़ से गिरना, पेड़ से कूदना, घोड़े से उतरना, पहाड़ से निकलना, आदि। **जिस स्थान से अलग होने की क्रिया होती है, उस स्थान के नामशब्द में पंचमी विभक्ति के चिह्न लगते हैं।**
2. पंचमी विभक्ति के चिह्न ये हैं -- एकवचन में 'आत्' = 'ात्', द्विवचन में 'आभ्याम्' = 'ाभ्याम्' और बहुवचन में 'एभ्य:' = 'ेभ्य:'
3. पुलिंग और नपुंसकलिंग, दोनों ही, नामशब्दों के लिए पंचमी विभक्ति के चिह्न एक समान होते हैं।
4. विशेषण शब्दों में भी अपने-अपने नामशब्दों के समान ही पुं. और नपुं. में पंचमी विभक्ति के एकवचन, द्विवचन या बहुवचन के चिह्न लगते हैं।
5. **उदाहरण के लिए**

| | | | |
|---|---|---|---|
| **पुलिंग नामशब्द:** | पादपात् | पादपाभ्याम् | पादपेभ्य: |
| **नपुंसकलिंग नामशब्द:** | गृहात् | गृहाभ्याम् | गृहेभ्य: |
| **पुं. या नपुं. में विशेषण शब्द:** | श्वेतात् | श्वेताभ्याम् | श्वेतेभ्य: |

●●●

## पाठ : 20

## [ नामशब्द, विशेषण शब्दः पुलिंग/ नपुंसकलिंग, षष्ठी विभक्ति ]

अत्र दीपस्य प्रकाशः भवति।

सूर्यस्य किरणैः कमलं विकसति।

दशरथस्य पुत्रः वनं गच्छति।

जनकः प्रियस्य पुत्रस्य चित्रं पश्यति।

सः हस्तयोः नखान् कृन्तति।

सूर्य-चन्द्रयोः किरणैः प्रकाशः भवति।

वयं पादपानां फलानि खादामः।

यूयं मधुराणां फलानां रसं पिबथ।

अध्यापकः छात्राणां लेखान् पठति।

रजकः जनानां वस्त्राणि नयति।

### शब्दार्थ :--

| | |
|---|---|
| दीपः (पुं.) = दीपक, दीया | प्रकाशः (पुं.) = उजाला |
| सूर्यः (पुं.) = सूरज | वनम् (नपुं.) = जंगल |
| किरणः (पुं.) = किरण | चित्रम् (नपुं.) = तस्वीर |
| नखः (पुं.) = नाखून | कृन्त् = काटना |
| चन्द्रः (पुं.) = चाँद | रसः (पुं.) = रस |

### अभ्यास :--

1. **दीपस्य, हस्तयोः, छात्राणां-- इन नामशब्दों को नीचे दिए गए वाक्यों में उचित रिक्त स्थआनों में लिख कर, वाक्यों को पूरा करोः-**

   सः.......... नखान् कृन्तति।  अध्यापकः ...... लेखान् पठति।

   अत्र ....... प्रकाशः भवति।

2. **नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित नामशब्दों और विशेषण शब्दों में उचित चिह्न लगाओः-**

वयं पादप फलानि खादामः। सूर्य-चन्द्र किरणैः प्रकाशः भवति। सूर्य किरणैः कमलं विकसति। जनकः प्रिय पुत्रस्य चित्रं पश्यति। यूयं मधुर फलानां रसं पिबथ।

3. **संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अर्थ लिखो।**

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| अत्र दीपस्य प्रकाशः भवति।<br>सूर्य चन्द्रयोः किरणैः प्रकाशः भवति।<br>वयं पादपानां फलानि खादामः। | |

4. **संस्कृत बनाओ--**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| दशरथ का बेटा जंगल को जाता है।<br>वह दो हाथों को नाखूनों को काटता है।<br>अध्यापक विद्यार्थियों के लेखों को पढ़ता है। | |

**अध्यापन-संकेतः-**

1. **एक नामशब्द का सम्बन्ध किसी दूसरे नामशब्द के साथ बताने के लिए, पहले नामशब्द में षष्ठी विभक्ति के चिह्न लगाये जाते हैं,** जैसे – दशरथस्य पुत्रः = दशरथ का बेटा।
2. षष्ठी विभक्ति के चिह्न ये हैं -- एकवचन में 'स्य', द्विवचन में 'योः' और बहुवचन में 'आनाम्' = 'ानाम्'।
3. पुलिंग और नपुंसकलिंग दोनों ही नामशब्दों के लिए षष्ठी विभक्ति के चिह्न एक समान हैं।
4. विशेषण शब्दों में अपने-अपने नामशब्दों के समान चिह्न लगते हैं।
5. उदाहरण के लिए

| | | | |
|---|---|---|---|
| **पुलिंग नामशब्द :** | दीपस्य | दीपयोः | दीपानाम् |
| **नपुंसकलिंग नामशब्द :** | फलस्य | फलयोः | फलानाम् |
| **पुं. या नपुं. में विशेषण शब्द :** | मधुरस्य | मधुरयोः | मधुराणाम् |

●●●

## पाठ : 21

## [ नामशब्द, विशेषण शब्दः पुलिंग/ नपुंसकलिंग, सप्तमी विभक्ति ]

वसन्ते पुष्पाणि विकसन्ति।

ग्रीष्मे पादपाः फलन्ति।

वर्षा-काले मेघाः वर्षन्ति।

नग्नयोः पादयोः कण्टकानि विशन्ति।

छात्रस्य हस्तयोः पुस्तकानि भवन्ति।

पर्वतेषु वनानि भवन्ति।

नगरेषु उपवनानि भवन्ति।

वनेषु, उपवनेषु च पादपाः रोहन्ति।

पादपेषु फलानि भवन्ति।

फलेषु मधुरः रसः भवति।

### शब्दार्थ :--

| | |
|---|---|
| वसन्तः (पुं.) = वंसत ऋतु | ग्रीष्मः (पुं.) = गरमी की ऋतु |
| फल् = फलना, फल लगना | वर्षा-कालः (पुं.) = बरसात का समय |
| मेघः (पुं.) = बादल | वर्ष् = बरसना |
| विश् = घुसना, अंदर जाना | कण्टकम् (नपुं.) = काँटा |
| नगरम् (नपुं.) = शहर | नग्न (विशेषण) = नंगा |

### अभ्यास :--

1. **ग्रीष्मे, हस्तयोः, पर्वतेषु-- इन नामशब्दों को नीचे दिए गए वाक्यों में उचित रिक्त स्थानों में लिखकर, वाक्यों को पूरा करोः-**

   छात्रस्य ...................... पुस्तकानि भवन्ति। ............... पादपाः फलन्ति।

   .......................... वनानि भवन्ति।

**2. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित नामशब्दों और विशेषण शब्दों में उचित चिह्न लगाकर वाक्यों को पूरा करो:-**

नग्न पाद कण्टकानि विशन्ति। नगर उपवनानि भवन्ति।

वसन्त पुष्पाणि विकसन्ति वर्षा–काल मेघा: वर्षन्ति।

**3. संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अर्थ लिखो।**

| संस्कृत वाक्य | हिन्दी अर्थ |
|---|---|
| वर्षा–काले मेघा: वर्षन्ति।<br>नग्नयो: पादयो: कण्टकानि विशन्ति।<br>फलेषु मधुर: रस: भवति। | |

**4. संस्कृत बनाओ--**

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| वसन्त में फूल खिलते हैं।<br>विद्यार्थी के दो हाथों में पुस्तकें होती हैं।<br>पहाड़ों पर जंगल होते हैं। | |

**अध्यापन–संकेत:-**

1. ऊपर के वाक्यों से उदाहरण देकर विद्यार्थियों को समझाया जाये कि **जिस स्थान में, या स्थान पर, या समय में, या समय पर क्रिया होती है, उसके नाम शब्दों में सप्तमी विभक्ति के चिह्न लगते हैं।**
2. सप्तमी विभक्ति के चिह्न ये हैं --- एकवचन में 'ए' = 'े', द्विवचन में 'यो:', और बहुवचन में 'एषु' = 'ेषु'।
3. पुलिंग और नपुंसकलिंग, दोनों ही, नामशब्दों के लिए सप्तमी विभक्ति के चिह्न एक समान होते हैं।
4. उदाहरण के लिए

| | | | |
|---|---|---|---|
| **पुलिंग नामशब्द :** | मेघे | मेघयो: | मेघेषु |
| **नपुंसकलिंग नामशब्द :** | नगरे | नगरयो: | नगरेषु |

5. विशेषण शब्दों में अपने–अपने नामशब्दों के समान ही सप्तमी विभक्ति के चिह्न लगते हैं, जैसे:-

| | | |
|---|---|---|
| (पुं.) श्वेते अश्वे | श्वेतयो: अश्वयो: | श्वेतेषु अश्वेषु |
| (नपुं.) मधुरे फले | मधुरयो: फलयो: | मधुरेषु फलेषु |

●●●

# पाठ : 22

## [ नामशब्द, विशेषण शब्दः पुलिंग/नपुंसकलिंग, सम्बोधन ]

हे राजेश! सोमवारे प्रातः त्वं कुत्र गच्छसि?

हे बालकौ! मंगलवारे सायं युवाम् उपवने भ्रमथः।

हे युवकाः! बुधवारे यूयं कुन्दुकेन खेलथ।

हे प्रिय छात्रः! गुरुवारे त्वं पाठान् पठसि।

हे प्रियौ छात्रौ! शुक्रवारे युवां लेखान् लिखथः।

हे प्रियाः छात्राः! शनिवारे यूयं गीतानि गायथ।

हे मित्र! रविवारे त्वं ग्रामं गच्छसि।

हे मित्रे! अद्य युवां गृहं गच्छथः।

हे मित्राणि! यूयं सदैव हसथ।

हे प्रियाणि मित्राणि! वयम् अपि सदैव नन्दामः।

### शब्दार्थः--

गुरुवारः (पुं.) = वीरवार

गीतम् (नपुं.) = गीत, गाना

मित्रम् (नपुं.) = मित्र, दोस्त

सदैव (अव्यय) = हमेशा ही

## अभ्यासः --

### संस्कृत बनाओः-

| हिन्दी वाक्य | संस्कृत वाक्य |
|---|---|
| हे नौजवानो! बुधवार में तुम गेंद से खेलते हो। | |
| हे मित्र! रविवार में तू गाँव को जाता है। | |
| हे दोस्तो! तुम हमेशा ही हँसते हो। | |
| हे प्यारे दो विद्यार्थियों! शुक्रवार में तुम दोनों लेखों को लिखते हो। | |
| हे प्यारे मित्रो! हमे भी हमेशा ही खुश होते हैं। | |

## अध्यापन-संकेतः-

1. विद्यार्थियों को बताया जाये कि **किसी को पुकाने के लिए उसके नामशब्द में सम्बोधन विभक्ति के चिह्न लगाये जाते हैं।**
2. सम्बोधन विभक्ति के एकवचन में पुंलिंग और नपुंसकलिंग नामशब्दों के लिए कोई भी चिह्न नहीं होता। उन नामशब्दों का मूलरूप ही प्रयुक्त किया जाता है। जैसे -- पुंलिंग नामशब्दों के लिए --- हे छात्र! हे राजेश! नपुंसकलिंग नामशब्द के लिए -- हे मित्र!
3. सम्बोधन विभक्ति के द्विवचन और बहुवचन के लिए उस-उस नामशब्द के प्रथमा विभक्ति के द्विवचन और बहुवचन के चिह्नों के समान ही चिह्न लगते हैं। जैसे ---

   पुलिंग नामशब्दों के सम्बोधन द्विवचन में .... हे छात्रौ! हे बालकौ!

   पुलिंग नामशब्दों के सम्बोधन बहुवचन में ... हे छात्राः! हे बालकाः!

   नपुंसकलिंग नामशब्द के सम्बोधन द्विवचन में ---- हे मित्रे!

   नपुंसकलिंग नामशब्द के सम्बोधन बहुवचन में --- हे मित्राणि!
4. विशेषण शब्दों के लिए सम्बोधन विभक्ति के चिह्न वही होते हैं, जो उनके नामशब्दों के लिए होते हैं, जैसे--

   **पुंलिंग नामशब्दों के विशेषणों में --** हे प्रिय छात्र! हे प्रियौ छात्रौ! हे प्रियाः छात्राः!

   **नपुंसकलिंग नामशब्दों के विशेषणों में ---** हे प्रिय मित्र! हे प्रिये मित्रे! हे प्रियाणि मित्राणि!

●●●

## पाठ : 23

**कथा--**

# काकः लोमशः च

एकदा एकः काकः ग्रामं गच्छति। तत्र सः गृहस्य अंगने अपूपस्य खण्डं पश्यति। सः काकः अपूपस्य खण्डं मुखेन धरति, वनं च गच्छति। तत्र वने सः काकः पादपस्य विटपे उपविशति।

तदा एकः लोमशः अपि तत्र आगच्छति। सः लोमशः काकस्य मुखे अपूपस्य खण्डं पश्यति। लोमशः अपूपम् इच्छति। सः पादपस्य समीपे उपविशति।

अधुना लोमशः काकं वदति-- 'हे मित्र! काकः अति मनोहरः भवति। काकस्य कण्ठः मधुरः भवति। काकः मधुरं गायति। हे मित्र काक! यदा त्वं गायसि, तदा अहं नन्दामि।'

लोमशस्य वचनैः काकः अति प्रसन्नः भवति। अति प्रसन्नः काकः कायति। यदा सः कायति, तदा काकस्य मुखात् अपूपस्य खण्डः नीचैः पतति।

लोमशः शीघ्रम् एव अपूपस्य खण्डं मुखेन धरति। तत्र एव च सः लोमशः अपूपस्य खण्डं खादति।

## शब्दार्थः-

| | |
|---|---|
| लोमशः (पुं.) = लोमड़ | एकदा (अव्यय) = एक बार |
| एकः (वि.) एक | अंगनम् (नपुं.) = आँगन |
| खण्डः (पुं.) = टुकड़ा | मुखम् (नपुं.) = मुँह |
| विटपः (पुं.) = शाखा | इच्छ् = चाहना |
| समीपे = पास में | अति (अव्यय) = बहुत |
| कण्ठ (पुं.) = गला | नीचैः (अव्यय) = नीचे |
| शीघ्रम (अव्यय) = जल्दी | वचनम् (पुं.) = बात,बोल |
| मनोहरः = सुन्दर | उपविश् = बैठना |

## अभ्यास :--

**1. हिन्दी में उत्तर लिखोः-**

(क) घर के आँगन में मालपूए के टुकड़े को देख कर कौवा क्या करता है ?

(ख) अपनी प्रशंसा सुन कर कौवा क्या करता है ?

(ग) कौवे से मालपूए का टुकड़ा पाने के लिए लोमड़ क्या कहता है ?

(घ) चालाक लोग अपना काम निकालने के लिए क्या करते हैं ?

(ड़) इस कथा से क्या शिक्षा मिलती है ?

**2. अपूपम्, कण्ठः, प्रसन्नः, काकः। इन नामशब्दों को नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में लिखकर वाक्यों को पूरा करोः-**

(क) काकस्य ....... मधुरः भवति।

(ख) लोमशः ........ इच्छति।

(ग) काकः अति ..... भवति।

(घ) ........ पादपस्य विटपे उपविशति।

●●●

# पाठ : 24

# संलापः वन-विहारः

## [ संख्या शब्दः पुलिंग/नपुंसकलिंग, प्रथमा विभक्ति ]

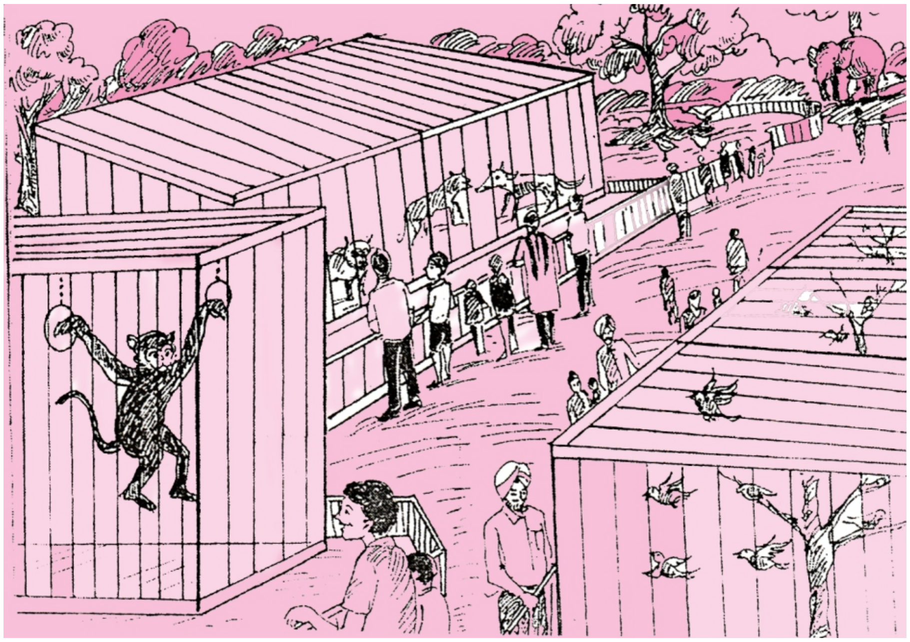

विजयः-- रविवारे विद्यालये अवकाशः भवति।

जार्जः-- अद्य रविवारे वयं विद्यालयं न गच्छामः।

वीरसिंहः-- अद्य कुत्रापि अन्यत्र चलामः।

रहीमः-- आम्, अद्य वन-विहाराय एव कुत्रापि चलामः।

विजयः-- वरम्, अद्य जन्तुगृहम् एव पश्यामः।

जार्जः-- अहह! अत्र जन्तुगृहे एकः सिंहः, द्वौ च गजौ स्वकेषु परिसरेषु तिष्ठन्ति।

वीरसिंहः -- अत्र त्रयः मृगाः चत्वारः श्वेताः अश्वाः अपि धावन्ति।

रहीमः -- पंच वानराः अपि पादपेषु कूर्दन्ति।

विजयः -- अत्र जन्तुगृहे खगाः अपि भवन्ति।

जार्जः-- आम्, अत्र षट् हंसाः सरोवरे तरन्ति।

वीरसिंहः-- सप्त कोकिलाः पादपेषु कूजन्ति।

रहीमः-- तत्र अष्ट शुकाः अपि वदन्ति।

विजयः-- अत्र नव चटकाः, दश च कपोताः कणान् खादन्ति।

जार्जः-- अधुना वयम् उपवनम् अपि पश्यामः।

वीरसिंह-- अत्र उपवने एकं पक्वं फलं, द्वे च पीते पुष्पे पतन्ति।

रहीमः-- तत्र त्रीणि हरितानि पत्राणि, चत्वारि च पीतानि पत्राणि पतन्ति।

विजयः-- अत्र सरोवरे पंच नीलानि कमलानि रोहन्ति।

जार्जः-- तत्र एव षट् श्वेतानि, सप्त च रक्तानि कमलानि अपि रोहन्ति।

वीरसिंहः-- अत्र उपवने अष्ट पाटल-पुष्पाणि, नव चम्पक-पुष्पाणि, दश च यूथिका-पुष्पाणि अपि रोहन्ति।

रहीमः-- अधुना वयं गृहम् एव गच्छामः।

## शब्दार्थः--

अवकाशः (पुं.) = छुट्टी

आम् (अव्यय) = हाँ

वरम् (अव्यय) = अच्छा

अहह (अव्यय) = आहा!

स्वक् (विशेषण)= अपना

मृगः (पुं.)= हरिण

सरोवरः (पुं.)= तालाब

कणः (पुं.)= दाना

पाटल-पुष्पम् (नपुं.) = गुलाब का फूल

रक्त (विशेषण)= लाल

चम्पक-पुष्पम् (नपुं.)= चमेली का फूल

द्वौ (पुं.)/द्वे (नपुं.)= दो

अन्यत्र (अव्यय) = और जगह पर

वन-विहारः (पुं.) = पिकनिक

जन्तुगृहम् (नपुं.) = चिड़ियाघर

सिंहः (पुं.) = शेर

परिसर (पुं.)= घेरा, स्थान

हंस (पुं.)= हंस (जल पक्षी)

चटक (पुं.) = चिड़ा

पीत (विशेषण)= पीला

तर् = तैरना

यूथिका-पुष्पम् (नपुं.)= जूही का फूल

एकः (पुं.)/एकम् (नपुं.)= एक

त्रयः (पुं.)/त्रीणि (नपुं.) = तीन

वत्वार: (पुं.)/चत्वारि (नपुं.)= चार

पंच (पुं./नपुं.)= पाँच

षट (पुं./नपुं.)= छः

सप्त (पुं./नपुं.)= सात

अष्ट (पुं./नपुं.)= आठ

नव (पुं./नपुं.)= नौ

दश (पुं./नपुं.)= दस

## अभ्यास :--

1. जन्तुगृह (चिड़ियाघर) में कौन-कौन से पशु और पक्षी हैं, उनके नाम संस्कृत और हिन्दी में लिखो।
2. उपवन (बाग) में कौन-कौन से फूल हैं, उनके नाम संस्कृत और हिन्दी में लिखो।
3. एक से दस तक के संख्या शब्दों को संस्कृत में पुलिंग और नपुंसकलिंग की प्रथमा विभक्ति में पृथक्-पृथक् लिखो।

## अध्यापन-संकेत:--

इस पाठ के वाक्यों में प्रयुक्त हुए संख्याशब्दों के उदाहरण देकर विद्यार्थियों को यह स्पष्ट कर दिया जाये कि संस्कृत में 'एक' से 'चार' तक के संख्या शब्दों के लिए पुलिंग और नपुंसकलिंग में पृथक्-पृथक् रूप होते हैं। 'पाँच' से 'दस' तक के लिए पुं. और नपुं. में संस्कृत संख्या शब्दों के रूप एक समान होते हैं।

## पाठ : 25

# लोकोक्ति-वचनानि

| संस्कृत-लोकोक्ति-वचन | हिन्दी-अर्थ/हिन्दी कहावत |
|---|---|
| 1. यथा देशः, तथा वेशः। | जैसा देश, वैसा वेश।<br>जैसा देस, वैसा भेस। |
| 2. यथा बीजं, तथा फलम्। | जैसा बीज, वैसा फल।<br>जैसा बोया, वैसा काटा। |
| 3. क्षणे रुष्टः, क्षणे तुष्टः। | पल में रूठ गया, पल में में मान गया।<br>पल में तोला, पल में मासा। |
| 4. इतो नष्टः, ततो भ्रष्टः। | इधर से गिरा, उधर से फिसला।<br>न घर का रहा, न घाट का। |
| 5. कण्टकेन एव कण्टकम्। | कांटे से ही कांटा।<br>कांटे से ही कांटा निकलता है। |
| 6. कथनात् करणं वरम्। | कहने से करना अच्छा।<br>कथनी से करनी भली। |
| 7. पर्वताः दूरतो रम्याः। | पहाड़ दूर से सुन्दर।<br>दूर के ढोल सुहावने। |
| 8. लोभः पापस्य कारणम् | लालच पाप का कारण है।<br>लालच बुरी बला। |

### शब्दार्थः-

लोकोक्ति- वचनानि = कहावत के बोल, कहावत के शब्द

ऊपर दी गई संस्कृत लोकोक्तियों के प्रत्येक शब्द का अर्थ उनके सामने दिये गये हिन्दी वाक्यार्थ में स्पष्ट हो जाता है।

### अभ्यास :-

ऊपर दी गई प्रत्येक संस्कृत लोकोक्ति के साथ-साथ हिन्दी कहावत को भी कण्ठस्थ कर के सुनाओ।

●●●

# व्याकरण - भाग

## I. नामशब्द

1. **नामशब्द की परिभाषा** -- किसी व्यक्ति या वस्तु को जिस नाम या शब्द से जाना जाता है, उस शब्द को **नामशब्द** (Noun) कहते हैं, जैसे-- बालक, युवक, अश्व, सिंह, फल, कमल आदि।

2. **विभक्ति और विभक्ति चिह्न** -- नामशब्दों के साथ लगने वाले चिह्नों को आठ वर्गों में बांटा गया है, उन वर्गों को विभक्ति कहते हैं, और उन चिह्नों को विभक्ति चिह्न कहते हैं, इन सब को नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

3. **कारक** -- वाक्य में क्रिया के साथ नामशब्दों के भिन्न-भिन्न सम्बन्धों को **कारक** कहते हैं। ये भी नीचे तालिका में दिये हैं।

| कारक | विभक्ति | अर्थ | विभक्ति चिह्नों से युक्त नामशब्द अर्थ सहित | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| 1. कर्ता | प्रथमा | ने | देवः<br>एक देव ने | देवौ<br>दो देवों ने | देवाः<br>देवों ने |
| 2. कर्म | द्वितीया | को | देवम्<br>एक देव को | देवौ<br>दो देवों को | देवान्<br>देवों को |
| 3. करण | तृतीया | से, के द्वारा | देवेन<br>एक देव से | देवाभ्याम्<br>दो देवों से | देवैः<br>देवों से |
| 4. सम्प्रदान | चतुर्थी | के लिए | देवाय<br>एक देव के लिए | देवाभ्याम्<br>दो देवों के लिए | देवेभ्यः<br>देवों के लिए |
| 5. अपादान | पंचमी | से (पृथक् होने में) | देवात्<br>एक देव से | देवाभ्याम्<br>दो देवों से | देवेभ्यः<br>देवों से |
| 6. सम्बन्ध | षष्ठी | का, के, की | देवस्य<br>एक देव का | देवयोः<br>दो देवों का | देवानाम्<br>देवों का |
| 7. अधिकरण | सप्तमी | में, पर | देवे<br>एक देव में | देवयोः<br>दो देवों में | देवेषु<br>देवों में |
| 8. सम्बोधन | सम्बोधन | हे! अरे! | हे देव!<br>हे देव! | हे देवौ!<br>हे दो देवो! | हे देवाः।<br>हे देवो! |

## 4. नामशब्दों के रूप

### (क) अकारान्त पुंलिंग नामशब्द

#### 1. बालक = लड़का

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | बालक: | बालकौ | बालका: |
| द्वितीया | बालकम् | बालकौ | बालकान् |
| तृतीया | बालकेन | बालकाभ्याम् | बालकै: |
| चतुर्थी | बालकाय | बालकाभ्याम् | बालकेभ्य: |
| पंचमी | बालकात् | बालकाभ्याम् | बालकेभ्य: |
| षष्ठी | बालकस्य | बालकयो: | बालकानाम् |
| सप्तमी | बालके | बालकयो: | बालकेषु |
| सम्बोधन | हे बालक! | हे बालकौ! | हे बालका:! |

#### 2. देव = देवता

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा | देव: | देवौ | देवा: |
| 2. द्वितीया | देवम् | देवौ | देवान् |
| 3. तृतीया | देवेन | देवाभ्याम् | देवै: |
| 4. चतुर्थी | देवाय | देवाभ्याम् | देवेभ्य: |
| 5. पंचमी | देवात् | देवाभ्याम् | देवेभ्य: |
| 6. षष्ठी | देवस्य | देवयो: | देवानाम् |
| 7. सप्तमी | देवे | देवयो: | देवेषु |
| 8. सम्बोधन | हे देव! | हे देवौ! | हे देवा:! |

#### 3. नर = आदमी

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा | नर: | नरौ | नरा: |
| 2. द्वितीया | नरम् | नरौ | नरान् |
| 3. तृतीया | नरेण | नराभ्याम् | नरै: |
| 4. चतुर्थी | नराय | नराभ्याम् | नरेभ्य: |
| 5. पंचमी | नरात् | नराभ्याम् | नरेभ्य: |
| 6. षष्ठी | नरस्य | नरयो: | नराणाम् |
| 7. सप्तमी | नरे | नरयो: | नरेषु |
| 8. सम्बोधन | हे नर! | हे नरौ! | हे नरा:! |

## 4. अज = बकरा

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा | अज: | अजौ | अजा: |
| 2. द्वितीया | अजम् | अजौ | अजान् |
| 3. तृतीया | अजेन | अजाभ्याम् | अजै: |
| 4. चतुर्थी | अजाय | अजाभ्याम् | अजेभ्य: |
| 5. पंचमी | अजात् | अजाभ्याम् | अजेभ्य: |
| 6. षष्ठी | अजस्य | अजयो: | अजानाम् |
| 7. सप्तमी | अजे | अजयो: | अजेषु |
| 8. सम्बोधन | हे अज! | हे अजौ! | हे अजा: ! |

## 5. गज = हाथी

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा | गज: | गजौ | गजा: |
| 2. द्वितीया | गजम् | गजौ | गजान् |
| 3. तृतीया | गजेन | गजाभ्याम् | गजै: |
| 4. चतुर्थी | गजाय | गजाभ्याम् | गजेभ्य: |
| 5. पंचमी | गजात् | गजाभ्याम् | गजेभ्य: |
| 6. षष्ठी | गजस्य | गजयो: | गजानाम् |
| 7. सप्तमी | गजे | गजयो: | गजेषु |
| 8. सम्बोधन | हे गज! | हे गजौ! | हे गजा: ! |

## 6. अश्व = घोड़ा

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा | अश्व: | अश्वौ | अश्वा: |
| 2. द्वितीया | अश्वम् | अश्वौ | अश्वान् |
| 3. तृतीया | अश्वेन | अश्वाभ्याम् | अश्वै: |
| 4. चतुर्थी | अश्वाय | अश्वाभ्याम् | अश्वेभ्य: |
| 5. पंचमी | अश्वात् | अश्वाभ्याम् | अश्वेभ्य: |
| 6. षष्ठी | अश्वस्य | अश्वयो: | अश्वानाम् |
| 7. सप्तमी | अश्वे | अश्वयो: | अश्वेषु |
| 8. सम्बोधन | हे अश्व! | हे अश्वौ! | हे अश्वा: ! |

## 7. सिंह = शेर

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा | सिंह: | सिंहौ | सिंहा: |
| 2. द्वितीया | सिंहम् | सिंहौ | सिंहान् |
| 3. तृतीया | सिंहेन | सिंहाभ्याम् | सिंहै: |
| 4. चतुर्थी | सिंहाय | सिंहाभ्याम् | सिंहेभ्य: |
| 5. पंचमी | सिंहात् | सिंहाभ्याम् | सिंहेभ्य: |
| 6. षष्ठी | सिंहस्य | सिंहयो: | सिंहानाम् |
| 7. सप्तमी | सिंहे | सिंहयो: | सिंहेषु |
| 8. सम्बोधन | हे सिंह! | हे सिंहौ! | हे सिंहा:! |

## 8. वानर = बंदर

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा | वानर: | वानरौ | वानरा: |
| 2. द्वितीया | वानरम् | वानरौ | वानरान् |
| 3. तृतीया | वानरेण | वानराभ्याम् | वानरै: |
| 4. चतुर्थी | वानराय | वानराभ्याम् | वानरेभ्य: |
| 5. पंचमी | वानरात् | वानराभ्यम् | वानरेभ्य: |
| 6. षष्ठी | वानरस्य | वानरयो: | वानराणाम् |
| 7. सप्तमी | वानरे | वानरयो: | वानरेषु |
| 8. सम्बोधन | हे वानर! | हे वानरौ! | हे वानरा:! |

## 9. काक = कौआ

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा | काक: | काकौ | काका: |
| 2. द्वितीया | काकम् | काकौ | काकान् |
| 3. तृतीया | काकेन | काकाभ्याम् | काकै: |
| 4. चतुर्थी | काकाय | काकाभ्याम् | काकेभ्य: |
| 5. पंचमी | काकात् | काकाभ्याम् | काकेभ्य: |
| 6. षष्ठी | काकस्य | काकयो: | काकानाम् |
| 7. सप्तमी | काके | काकयो: | काकेषु |
| 8. सम्बोधन | हे काक! | हे काकौ! | हे काका:। |

### 10. शुक = तोता

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा | शुकः | शुकौ | शुकाः |
| 2. द्वितीया | शुकम् | शुकौ | शुकान् |
| 3. तृतीया | शुकेन | शुकाभ्याम् | शुकैः |
| 4. चतुर्थी | शुकाय | शुकाभ्याम् | शुकेभ्यः |
| 5. पंचमी | शुकात् | शुकाभ्याम् | शुकेभ्यः |
| 6. षष्ठी | शुकस्य | शुकयोः | शुकानाम् |
| 7. सप्तमी | शुके | शुकयोः | शुकेषु |
| 8. सम्बोधन | हे शुक! | हे शुकौ! | हे शुकाः! |

## ( क ) अकारान्त नपुंसकलिंग नामशब्द

### 1. फल = फल

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा | फलम् | फले | फलानि |
| 2. द्वितीया | फलम् | फले | फलानि |
| 3. तृतीया | फलेन | फलाभ्याम् | फलैः |
| 4. चतुर्थी | फलाय | फलाभ्याम् | फलेभ्यः |
| 5. पंचमी | फलात् | फलाभ्याम् | फलेभ्यः |
| 6. षष्ठी | फलस्य | फलयोः | फलानाम् |
| 7. सप्तमी | फले | फलयोः | फलेषु |
| 8. सम्बोधन | हे फल! | हे फले! | हे फलानि! |

## 2. वन = जंगल

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा | वनम् | वने | वनानि |
| 2. द्वितीया | वनम् | वने | वनानि |
| 3. तृतीया | वनेन | वनाभ्याम् | वनैः |
| 4. चतुर्थी | वनाय | वनाभ्याम् | वनेभ्यः |
| 5. पंचमी | वनात् | वनाभ्याम् | वनेभ्यः |
| 6. षष्ठी | वनस्य | वनयोः | वनानाम् |
| 7. सप्तमी | वने | वनयोः | वनेषु |
| 8. सम्बोधन | हे वन! | हे वने! | हे वनानि! |

## 3. कमल = कमल

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा | कमलम् | कमले | कमलानि |
| 2. द्वितीया | कमलम् | कमले | कमलानि |
| 3. तृतीया | कमलेन | कमलाभ्याम् | कमलैः |
| 4. चतुर्थी | कमलाय | कमलाभ्याम् | कमलेभ्यः |
| 5. पंचमी | कमलात् | कमलाभ्याम् | कमलेभ्यः |
| 6. षष्ठी | कमलस्य | कमलयोः | कमलानाम् |
| 7. सप्तमी | कमले | कमलयोः | कमलेषु |
| 8. सम्बोधन | हे कमल! | हे कमले! | हे कमलानि! |

## 4. पत्र = पत्ता

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा | पत्रम् | पत्रे | पत्राणि |
| 2. द्वितीया | पत्रम् | पत्रे | पत्राणि |
| 3. तृतीया | पत्रेण | पत्राभ्याम् | पत्रैः |
| 4. चतुर्थी | पत्राय | पत्राभ्याम् | पत्रेभ्यः |
| 5. पंचमी | पत्रात् | पत्राभ्याम् | पत्रेभ्यः |
| 6. षष्ठी | पत्रस्य | पत्रयोः | पत्राणाम् |
| 7. सप्तमी | पत्रे | पत्रयोः | पत्रेषु |
| 8. सम्बोधन | हे पत्र! | हे पत्रे! | हे पत्राणि! |

### 5. पुस्तक = पुस्तक, किताब

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा | पुस्तकम् | पुस्तके | पुस्तकानि |
| 2. द्वितीया | पुस्तकम् | पुस्तके | पुस्तकानि |
| 3. तृतीया | पुस्तकेन | पुस्तकाभ्याम् | पुस्तकैः |
| 4. चतुर्थी | पुस्तकाय | पुस्तकाभ्याम् | पुस्तकेभ्यः |
| 5. पंचमी | पुस्तकात् | पुस्तकाभ्याम् | पुस्तकेभ्यः |
| 6. षष्ठी | पुस्तकस्य | पुस्तकयोः | पुस्तकानाम् |
| 7. सप्तमी | पुस्तके | पुस्तकयोः | पुस्तकेषु |
| 8. सम्बोधन | हे पुस्तक! | हे पुस्तके! | हे पुस्तकानि! |

## II. सर्वनाम शब्द

**1. सर्वनाम शब्द की परिभाषा --** जब किसी नामशब्द को वाक्य में दोहराना न हो, तो उस नामशब्द के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को सर्वनाम शब्द (Pronoun) कहते हैं, जैसे --- सः = वह।

यहाँ पर केवल तीन सर्वनाम शब्द ही लिये हैं, वे हैं--

1. तद् = वह; 2. युष्मद् = तू, तुम; 3. अस्मद् = मैं, हम।

यहाँ पर पाठ्यक्रम के अनुसार इन के रूप केवल प्रथमा विभक्ति में ही दिये गये हैं।

**2. सर्वनाम शब्दों के रूप--**

### 1. तद् = वह

**( क ) पुंलिंग में**

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा विभक्ति | सः | तौ | ते |

**( ख ) नपुंसक लिंग में =**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा विभक्ति | तत् | ते | तानि |

### 2. युष्मद् = तू, तुम

**सब लिंगों में समान =**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा विभक्ति | त्वम् | युवाम् | यूयम् |

### 3. अस्मद् = मैं, हम

**सब लिंगों में समान**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा विभक्ति | अहम् | आवाम् | वयम् |

## III. संख्यावाची शब्द

यहाँ पर केवल एक से दस तक संख्यावाची शब्द लिए गए हैं। एक से चार तक के लिए संख्याशब्दों के रूप पुलिंग और नपुंसकलिंग में भिन्न-भिन्न हैं। पांच से दस तक के लिए संख्या शब्दों के रूप पुलिंग और नपुंसक लिंग में समान हैं। यहाँ पर केवल प्रथमा विभक्ति में रूप दिये गये हैं।

| मूल संख्यावाची शब्द | अर्थ | पुलिंग प्रथमा विभक्ति में | नपुंसकलिंग प्रथमा विभक्ति में |
|---|---|---|---|
| 1. एक | एक | एक: | एकम् |
| 2. द्वि | दो | द्वौ | द्वे |
| 3. त्रि | तीन | त्रय: | त्रीणि |
| 4. चतुर् | चार | चत्वार: | चत्वारि |
| 5. पंचन् | पांच | पंच | पंच |
| 6. षष् | छ: | षट् | षट् |
| 7. सप्तन् | सात | सप्त | सप्त |
| 8. अष्टन् | आठ | अष्ट | अष्ट |
| 9. नवन् | नौ | नव | नव |
| 10. दशन् | दस | दश | दश |

## IV. क्रियाशब्द

1. **क्रिया-शब्द --** कार्य करने को 'क्रिया' कहते हैं। जिन शब्दों से कार्य करने का अर्थ प्रकट होता है, उन शब्दों को **'क्रियाशब्द'** (Verb) कहते हैं, जैसे -- 'पठति' = पढ़ता है, 'खेलति' = खेलता है, 'चलति' = चलता है आदि।
2. **धातु --** क्रियाशब्द के मूलशब्द को **'धातु'** (Root) कहते हैं, जैसे --- 'पठति' का मूल 'पठ्' धातु, 'खेलति' का 'खेल', 'चलति' का 'चल्' आदि।
3. **पुरुष --** क्रिया को करने वालों को तीन वर्गों में बांटा जाता है। एक वर्ग है --- 'वह, वे और सभी नामशब्द' इसे प्रथमपुरुष (Third Person) कहते हैं। दूसरा वर्ग 'तू और तुम', इसे मध्यम प्रथमपुरुष (Second Person) कहते है। तीसरा वर्ग -- मैं और हम इसे उत्तमपुरुष (First Person) कहते हैं।

इन्हीं के अनुसार धातुओं के साथ प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष उत्तमपुरुष के भिन्न-भिन्न चिह्न लगकर क्रियाशब्द के रूप बनते हैं। जैसे -- 'पठति' (प्रथम पुरुष) 'पठसि' (मध्यमपुरुष), और 'पठामि' (उत्तमपुरुष)।

4. **वचन** -- क्रिया को करने वाला गिनती में यदि एक है, तो क्रिया में **'एकवचन'** का चिह्न लगता है, यदि दो हों तो 'द्विवचन' का चिह्न, और यदि दो से अधिक हो, तो 'बहुवचन' का चिह्न लगता है, जैसे 'पठति' (एकवचन), 'पठतः' (द्विवचन), 'पठन्ति' (बहुवचन)।

5. **लट् लकार** -- वर्तमान काल में हो रही क्रिया के लिए क्रियाशब्द में 'लट् लकार' के चिह्न लगते हैं, जैसे-- पठति, पठतः, पठन्ति, पठसि, पठथः पठथ आदि।

### (क) भ्वादिगण की परस्मैपदी धातुओं के रूप (केवल लट् लकार में)

#### 1. खेल् = खेलना

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | खेलति | खेलतः | खेलन्ति |
| मध्यमपुरुष | खेलसि | खेलथः | खेलथ |
| उत्तमपुरुष | खेलामि | खेलावः | खेलामः |

#### 2. हस् = हंसना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | हसति | हसतः | हसन्ति |
| मध्यमपुरुष | हससि | हसथः | हसथ |
| उत्तमपुरुष | हसामि | हसावः | हसामः |

#### 3. चल् = चलना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | चलति | चलतः | चलन्ति |
| मध्यमपुरुष | चलसि | चलथः | चलथ |
| उत्तमपुरुष | चलामि | चलावः | चलामः |

#### 4. चर् = चरना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | चरति | चरतः | चरन्ति |
| मध्यमपुरुष | चरसि | चरथः | चरथ |
| उत्तमपुरुष | चरामि | चरावः | चरामः |

#### 5. पठ् = पढ़ना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | पठति | पठतः | पठन्ति |
| मध्यमपुरुष | पठसि | पठथः | पठथ |
| उत्तमपुरुष | पठामि | पठावः | पठामः |

### 6. पत् = गिरना

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | पतति | पततः | पतन्ति |
| मध्यमपुरुष | पतसि | पतथः | पतथ |
| उत्तमपुरुष | पतामि | पतावः | पतामः |

### 7. वद् = बोलना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | वदति | वदतः | वदन्ति |
| मध्यमपुरुष | वदसि | वदथः | वदथ |
| उत्तमपुरुष | वदामि | वदावः | वदामः |

### 8. गर्ज् = गरजना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | गर्जति | गर्जतः | गर्जन्ति |
| मध्यमपुरुष | गर्जसि | गर्जथः | गर्जथ |
| उत्तमपुरुष | गर्जामि | गर्जावः | गर्जामः |

### 9. कूज् = चहचहाना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | कूजति | कूजतः | कूजन्ति |
| मध्यमपुरुष | कूजसि | कूजथः | कूजथ |
| उत्तमपुरुष | कूजामि | कूजावः | कूजामः |

### 10. धाव्= दौड़ना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | धावति | धावतः | धावन्ति |
| मध्यमपुरुष | धावसि | धावथः | धावथ |
| उत्तमपुरुष | धावामि | धावावः | धावामः |

### 11. खाद्= खाना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | खादति | खादतः | खादन्ति |
| मध्यमपुरुष | खादसि | खादथः | खादथ |
| उत्तमपुरुष | खादामि | खादावः | खादामः |

### 12. पा→पिब् = पीना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | पिबति | पिबतः | पिबन्ति |
| मध्यमपुरुष | पिबसि | पिबथः | पिबथ |
| उत्तमपुरुष | पिबामि | पिबावः | पिबामः |

### 13. गम्→गच्छ = जाना

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | गच्छति | गच्छत: | गच्छन्ति |
| मध्यमपुरुष | गच्छसि | गच्छथ: | गच्छथ |
| उत्तमपुरुष | गच्छामि | गच्छाव: | गच्छाम: |

### 14. नी→नय् = ले जाना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | नयति | नयत: | नयन्ति |
| मध्यमपुरुष | नयसि | नयथ: | नयथ |
| उत्तमपुरुष | नयामि | नयाव: | नयाम: |

### 15. भू→भव् = होना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | भवति | भवत: | भवन्ति |
| मध्यमपुरुष | भवसि | भवथ: | भवथ |
| उत्तमपुरुष | भवामि | भवाव: | भवाम: |

## ( ख ) तुदादिगण की परस्मैपदी धातुओं के रूप ( केवल लट् लकार में )

### 1. लिख् = लिखना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | लिखति | लिखत: | लिखन्ति |
| मध्यमपुरुष | लिखसि | लिखथ: | लिखथ |
| उत्तमपुरुष | लिखामि | लिखाव: | लिखाम: |

### 2. मिल् = मिलना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | मिलति | मिलत: | मिलन्ति |
| मध्यमपुरुष | मिलसि | मिलथ: | मिलथ |
| उत्तमपुरुष | मिलामि | मिलाव: | मिलाम: |

### 3. विश् = घुसना, अंदर जाना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | विशति | विशत: | विशन्ति |
| मध्यमपुरुष | विशसि | विशथ: | विशथ |
| उत्तमपुरुष | विशामि | विशाव: | विशाम: |

### 4. सिच्→सिंच् = सींचना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | सिंचति | सिंचत: | सिंचन्ति |
| मध्यमपुरुष | सिंचसि | सिंचथ: | सिंचथ |
| उत्तमपुरुष | सिंचामि | सिंचाव: | सिंचाम: |

### 5. प्रच्छ→पृच्छ् = पूछना

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुष | पृच्छति | पृच्छत: | पृच्छन्ति |
| मध्यमपुरुष | पृच्छसि | पृच्छथ: | पृच्छथ |
| उत्तमपुरुष | पृच्छामि | पृच्छाव: | पृच्छाम: |

# शब्दार्थ-कोष

| | |
|---|---|
| अंगनम् | आँगन |
| अजः | बकरा |
| अति ( अ. ) | बहुत |
| अत्र ( अ. ) | यहाँ |
| अद्य ( अ. ) | आज |
| अधुना ( अ. ) | अब |
| अध्यापकः | अध्यापक, टीचर |
| अन्यत्र ( अ. ) | और जगह पर |
| अपि ( अ. ) | भी |
| अपूपः | मालपूआ |
| अवकाशः | छुट्टी |
| अवतर् | उतरना |
| अश्वः | घोड़ा |
| अष्ठ | आठ |
| अस्त्रम् | आँसू |
| अहम् ( सर्व ) | मैं |
| अ ह ह ! ( अ. ) | आहा! |
| कूर्द् | कूदना |
| आनय् | लाना |
| आपणः | दुकान |
| आम् ( अ. ) | हाँ |
| आवाम् ( सर्व. ) | हम दो |
| इच्छ् | चाहना |
| उत्पत् | उड़ना |
| उपवनम् | बाग |
| उपविश् | बैठना |
| एकः ( पुं. ) | एक |
| एकम् ( नपुं. ) | एक |
| एकदा | एक बार |
| एव ( अ. ) | ही |
| कणः | दाना |

| | |
|---|---|
| कण्टकम् | काँटा |
| कण्ठः | गला |
| कथनम् | कहना |
| कदा ( अ. ) | कब |
| कन्दुकः | गेंद |
| कपोतः | कबूतर |
| कमलम् | कमल |
| करणम् | करना |
| कर्णः | कान |
| काकः | कौआ |
| काय् | काँव-काँव करना |
| किरणः | किरण |
| कुण्डलम् | कान का गहना |
| कुत्र ( अ. ) | कहाँ |
| कुत्रापि ( अ. ) | कहीं भी |
| कूज् | कुहू-कुहू करना, चहचहाना |
| आगच्छ् | आना |
| कृन्त् | काटना |
| कृषकः | किसान |
| कृष्ण ( वि. ) | काला |
| कोकिलः | कोयल |
| क्षणम् | पल |
| क्षेत्रम् | खेत |
| खगः | पक्षी |
| खण्डः | टुकड़ा |
| खन् | खोदना |
| खनित्रम् | फावड़ा, कुदाल, खुर्पा |
| खाद् | खाना |
| खेल् | खेलना |
| गच्छ् | जाना |

| | |
|---|---|
| **गजः** | हाथी |
| **गर्ज्** | गरजना |
| **गाय्** | गाना |
| **गीतम्** | गीत |
| **गुरुवारः** | वीरवार |
| **गृहम्** | घर |
| **ग्रामः** | गाँव |
| **ग्रीष्मः** | गरमी का मौसम |
| **घासः** | घास |
| **चंचल ( वि. )** | नटखट |
| **च ( अ. )** | और |
| **चक्रम्** | पहिया |
| **चटकः** | चिड़ा |
| **चत्वारः ( पुं. )** | चार |
| **चत्वारि ( नपुं. )** | चार |
| **चन्द्रः** | चाँद |
| **चम्पक-पुष्पम्** | चमेली का फूल |
| **चर्** | चरना |
| **चर्व्** | चबाना |
| **चित्रम्** | तस्वीर |
| **चल** | चलना |
| **चूष्** | चूसना |
| **छात्रः** | विद्यार्थी |
| **जनः** | लोग |
| **जनकः** | पिता |
| **जन्तुगृहम्** | चिड़ियाघर |
| **जलम्** | पानी |
| **जिघ्र्** | सूँघना |
| **तत् ( नपुं. )** | वह |
| **तत्र ( अ. )** | वहाँ |
| **तथा ( अ.: )** | वैसा |
| **तदा ( अ. )** | तब |
| **तर्** | तैरना |
| **तानि ( नपुं. )** | वे (सब) |
| **तिष्ठ्** | ठहरना |
| **तुष्ट** | मान गया, खुश हो गया |
| **ते ( पुं. )** | वे (सब) |
| **ते ( नपुं. )** | वे दो |
| **तौ ( पुं. )** | वे दो |
| **त्रयः ( पुं. )** | तीन |
| **त्रीणि ( नपुं. )** | तीन |
| **त्वम् ( सर्व. )** | तू |
| **दक्षिण ( वि. )** | दाहिना |
| **दण्डः** | डंडा |
| **दन्तः** | दाँत |
| **दश ( पुं./नपुं. )** | दस |
| **दीपः** | दीया |
| **दुग्धम्** | दूध |
| **दूरतः( अ. )** | दूर से |
| **देशः** | देश |
| **द्वे ( नपुं. )** | दो |
| **द्वौ ( पुं. )** | दो |
| **धर्** | पकड़ना |
| **धाव्** | दौड़ना |
| **न ( अ. )** | नहीं |
| **नखः** | नाखून |
| **नगरम्** | शहर |
| **नग्न ( वि. )** | नंगा |
| **नदः** | दरिया |
| **नन्द्** | खुश होना |
| **नय्** | ले जाना |
| **नव ( पुं./नपुं. )** | नौ |
| **नवीन ( वि. )** | नया |
| **नष्ट ( वि. )** | गिरा, भागा, नाश हुआ |

| | |
|---|---|
| **निज ( वि. )** | अपना |
| **निस्सर्** | निकलना |
| **नीचैः ( अ. )** | नीचे |
| **नील ( वि. )** | नीला |
| **नेत्रम्** | आँख |
| **पंच ( पुं./नपुं. )** | पाँच |
| **पक्व ( वि. )** | पका हुआ |
| **पठ्** | पढ़ना |
| **पठनम्** | पढ़ना, पढ़ाई |
| **पत्रम्** | पत्ता |
| **परिसरः** | घेरा, स्थान |
| **पर्वतः** | पहाड़ |
| **पश्य्** | देखना |
| **पाटल-पुष्पम्** | गुलाब का फूल |
| **पाठः** | पाठ, सबक |
| **पादः** | पैर |
| **पादपः** | पेड़, वृक्ष |
| **पापम्** | पाप |
| **पिष्** | पीना |
| **पीत ( वि. )** | पीला |
| **पुत्रः** | बेटा |
| **पुष्पम्** | फूल |
| **पुस्तकम्** | पुस्तक, किताब |
| **प्रकाशः** | उजाला |
| **प्रसन्न ( वि. )** | खुश |
| **प्रातः ( अ. )** | सवेरा |
| **प्रिय ( वि. )** | प्यारा |
| **फल्** | फलना, फल लगना |
| **फलम्** | फल |
| **बालकः** | लड़का |
| **बीजम्** | बीज |
| **बुधवारः** | बुधवार |
| **भव्** | होना |
| **भ्रम्** | घूमना |
| **भ्रमणम्** | घूमना, सैर |
| **भ्रष्ट( वि. )** | फिसला |
| **मंगलवारः** | मंगलवार |
| **मधुर ( वि. )** | मीठा |
| **मनोहर ( वि. )** | मन को भाने वाला, |
| **सुन्दर ( वि. )** | सुंदर |
| **मयूरः** | मोर |
| **मलिन ( वि. )** | मैला |
| **मालाकारः** | माली |
| **मित्रम्** | मित्र, दोस्त |
| **मुखम्** | मुख, मुँह |
| **मृगः** | हरिण |
| **मेघः** | बादल |
| **यच्छ्** | देना |
| **यत्र ( अ. )** | जहाँ |
| **यथा ( अ. )** | जैसा |
| **यदा ( अ. )** | जब |
| **युवकः** | नौजवान |
| **युवाम् ( सर्व. )** | तुम दो |
| **यूथिका-पुष्पम्** | जूही का फूल |
| **यूयम् ( सर्व. )** | तुम (सब) |
| **रक्त ( वि. )** | लाल |
| **रजकः** | धोबी |
| **रथः** | रथ |
| **रम्य ( वि. )** | सुंदर |
| **रविवारः** | रविवार |
| **रुष्ट ( वि. )** | रूठा |
| **रसः** | रस, जूस |
| **रोह्** | उगना |
| **लिख्** | लिखना |
| **लेखः** | लेख, निबन्ध |

| | |
|---|---|
| **लोकोक्ति-वचनानि** | कहावत के शब्द |
| **लोभः** | लालच |
| **लोमशः** | लोमड़ |
| **वचनम्** | शब्द बोल |
| **वद्** | बोलना |
| **वनम्** | जंगल |
| **वन-विहारः** | जंगल की सैर, पिकनिक |
| **वयम् ( सर्व. )** | हम सब |
| **वरम् ( अ. )** | अच्छा |
| **वर्ष्** | बरसना |
| **वर्षा-काल** | बरसात का समय |
| **बसन्तः** | वसंत ऋतु, बहार का मौसम |
| **वस्त्रम्** | कपड़ा |
| **वानरः** | बंदर |
| **विकस्** | खिलना |
| **विटपः** | शाखा, टहनी |
| **विद्यालयः** | विद्यालय, स्कूल |
| **विश्** | घुसना, अंदर जाना |
| **वेशः** | वेश, भेस |
| **शनिवारः** | शनिवार |
| **शीघ्रम् ( अ. )** | जल्दी |
| **शुकः** | तोता |
| **शुक्रवारः** | शुक्रवार |
| **शुष्क ( वि. )** | सूखा |
| **श्वेतः** | सफेद |
| **षट् ( पुं./नपुं. )** | छः |
| **सः ( पुं./सर्व. )** | वह |
| **सदा ( अ. )** | हमेशा |
| **सदैव ( अ. )** | हमेशा ही |
| **सप्त ( पुं./नपुं. )** | सात |
| **समीपे ( अ. )** | पास में |
| **सरोवरः** | तालाब, सरोवर |
| **सर्वत्र ( अ. )** | सब जगह पर |
| **सह ( अ. )** | साथ |
| **सायम् ( अ. )** | शाम को |
| **सिंच्** | सींचना |
| **सिंह** | शेर |
| **सुखम्** | सुख, आराम |
| **सुन्दर ( वि. )** | सुंदर |
| **सूर्यः** | सूरज |
| **सैनिकः** | फौजी |
| **सोमवारः** | सोमवार |
| **स्वच्छ ( वि. )** | साफ |
| **स्थूल ( वि. )** | मोटा |
| **स्वस्थ ( वि. )** | तन्दरुस्त |
| **स्वक ( वि. )** | अपना |
| **स्वर्णकारः** | सुनार |
| **हंसः** | हंस (जल पक्षी) |
| **हरित ( वि. )** | हरा |
| **हस्** | हँसना |
| **हस्तः** | हाथ |

**संकेत – अ.** = अव्यय, **नपुं.** = नपुंसकलिंग, **पुं.** = पुलिंग, **वि.** = विशेषण, **सर्व.** = सर्वनाम